ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 फरवरी 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 04 फरवरी 2018 से 10 फरवरी 2018

फाल्गुन कृ.– 04 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 59, अंक 05, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

न्यायमूर्ति डॉ. मेहरचंद महाजन पर डाक विभाग ने जारी किया एक विशेष डाक-टिकट

हाल ही में भारतीय डाक विभाग द्वारा भारत के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश डॉ. मेहरचंद महाजन के नाम पर एक डाक टिकट जारी किया गया। डॉ. मेहरचंद महाजन आर्य समाज और डी.ए.वी. से अभिन्न रूप से जुड़े रहे और उन्होंने देश विभाजन के बाद डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति की पुनःस्थापना और संचालन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि 'टंकारा' में स्थित सम्पत्ति को टंकारा ट्रस्ट को दिलाने में भी उनका योगदान रहा।

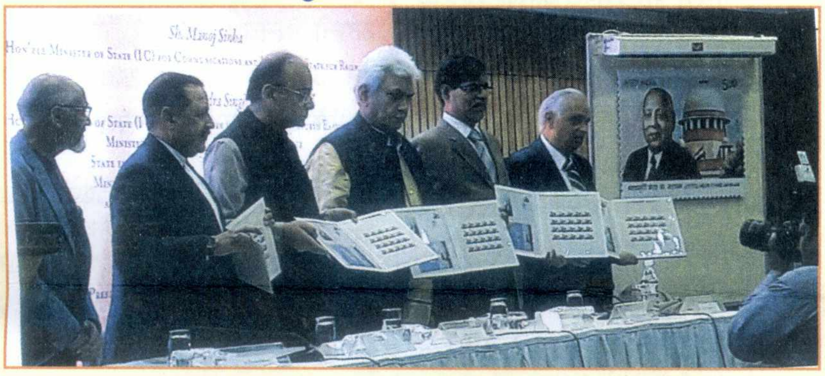

डाक–टिकट को जारी करने के लिए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान डॉ. पूनम सूरी के साथ–साथ देश के वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली, उनके साथ श्री जितेन्द्र कुमार और डाक–विभाग के मंत्री श्री मनोज शर्मा उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. मेहरचंद महाजन के व्यक्तित्व और उनके कार्यों पर विशद् चर्चाएँ हुईं जिसमें जम्मू–कश्मीर का भारत में विलय कराने में उनके योगदान की विशेष चर्चा थी। डॉ. पूनम सूरी ने अपने संबोधन में जस्टिस महाजन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उनके व्यक्तित्व के अनुकरणीय गुणों पर प्रकाश डाला। उनके जीवन की एक घटना सुनाते हुए उन्होंने बताया कि जस्टिस महाजन की सोच में न तो कोई गरीब होता है न अमीर, न जाति और मज़हब कोई महत्त्व रखता है। उनकी नज़र में एक अच्छा इंसान होना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। उन्होंने बताया कि जस्टिस महाजन के नाम पर डी.ए.वी. में कई संस्थाएं चल रही हैं।

इस सारे योगदान के लिए जस्टिस मेहरचंद महाजन के सुपुत्र श्री प्रबोध महाजन, जो डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उप–प्रधान भी हैं, विशेष रूप से सक्रिय रहे।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्ट ऑफ लोनी रोड दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्ट ऑफ लोनी रोड दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह "अनुगूँज" अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस महोत्सव में अनेक गणमान्य अतिथि एवं अभिभावक उपस्थित रहे। इस समारोह के मुख्य अतिथि "पद्मश्री" डॉ. पूनम सूरी जी (अध्यक्ष) डी.ए.वी. सी.एम.सी. एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली थे। विशिष्ट अतिथियों में श्री टी.आर. गुप्ता (उपाध्यक्ष) डी.ए.वी. सी.एम.सी., डॉ. निशा पेशिन (डायरेक्टर) पी.एस.–2, डी.ए.वी. सी.एम.सी., श्री नानक चन्द जी प्रबन्धक डी.ए.वी. स्कूल तथा अनेक डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्य उपस्थित रहे। समारोह का शुभारम्भ डी.ए.वी. गान के उपरान्त दीप प्रज्ज्वलन से किया गया।

विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत कर अपनी छिपी हुई प्रतिभा का प्रदर्शन किया। समारोह में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमति समीक्षा शर्मा ने विद्यालय की सफल यात्रा की संक्षिप्त सूचना प्रदान की। समारोह संध्या की पराकाष्ठा उस समय अपने चरम पर पहुँची जब विद्यालय के छात्रों द्वारा सामाजिक संदेशों से परिपूरित नृत्य नाटिका "मनुर्भव" प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि डॉ. पूनम सूरी जी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए सभी को आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। साथ ही विद्यालय परिवार तथा

छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना देते हुए उत्साहवर्धन किया। उसके उपरान्त मेधावी छात्र–छात्राओं को पुरुस्कार प्रदान किए गए। समारोह के समापन पर ग्रैण्ड फिनाले के उपरान्त विद्यालय के प्रबन्धक श्रीमान नानक चन्द जी ने सभी को धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. पटियाला में 'वैदिक-भजन-संध्या' का आयोजन

'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब' के तत्त्वावधान में 'आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिंदरा रोड, पटियाला द्वारा परमपिता परमेश्वर का आशीर्वाद लेते हुए बच्चों को 'वैदिक–विचारधारा' एवं 'नैतिक–मूल्यों' से संस्कारवान बनाने के उद्देश्य से **'वैदिक–भजन–संध्या'** का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों और शिक्षकवृन्द ने अपने मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों से स्कूल परिसर को भक्तिमय बना

दिया। समारोह का शुभारम्भ **'ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है'** पर सुन्दर नृत्य के साथ ईश्वर स्तुति करके हुआ। तदोपरान्त वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ 'दीपदान' करके डी.ए.वी. गान किया गया। प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर व शिक्षकवृन्द ने मुख्यअतिथि, वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी विदेह योगी जी और अन्य अतिथिगण को पुष्प माला डालकर उनका अभिनन्दन किया।

भजनों के माध्यम से स्वामी दयानन्द,

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 04 फ़रवरी 2018 से 10 फरवरी 2018

वाणी के सलिल में स्नान

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैः, भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत् पाप्मा मौत मृत्युः , अन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः।।

अथर्व 17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **आदित्यः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अहं**) मैं (**ऋतेन**) सत्य से (**च**) और (**सर्वैः**) सब (**ऋतुभिः**) ऋतुओं से (**गुप्तः**) रक्षितज [**होऊँ**], (**भूतेन**) अतीत से (**भव्येन च**) और भविष्यत् से (**गुप्तः**) रक्षित [**होऊँ**]। (**पाम्पा**) पाप (**मा**) मुझे (**मा**) मत (**प्रापत्**) प्राप्त हो, (**मा उत**) **न ही** (**मृत्युः**) मृत्यु [**प्राप्त हो**]। (**अहं**) मैं (**वाचः**) वेदवाणी के (**सलिलेन**) सलिल से, ज्ञानामृत से (**अन्तः दधे**) [स्वंय को] आच्छादित कर देता हूँ।

● मैं अ–सुरक्षा के सन्त्रास से व्याप्त इस जगत् में सर्वात्मना रक्षित रहना चाहता हूँ। पर रक्षा का उपाय क्या है? सहस्त्रों सैनिकों को अपने चारों ओर सन्नद्व करके भी मैं वैसी रक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, जैसी स्वयं नैतिक नियमों में बंधकर तथा आत्म–बल को जगाकर पा सकता हूँ। सर्वप्रथम मैं 'सत्य' से रक्षित होऊँ। मनुष्य बहुधा अपनी रक्षा के लिए 'असत्य' का अवलम्बन करता है। वह सोचता है कि असत्य कहकर मैं अपराध के दण्ड से बच जाऊँगा। पर असत्य छिपता नहीं। अपराधी को अपराध का दण्ड तो मिलता ही है, असत्य–भाषण का अतिरिक्त दण्ड भोगना पड़ता है। इसके विपरीत सत्य बोलकर अपना अपराध स्वीकार कर लेने पर वह क्षमा का पात्र हो जाता है। मैं ऋतुओं से भी रक्षित होऊँ। ग्रीष्म, बर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, छहों ऋतुएँ व्यवस्थित रूप से आकर प्रकृति के कार्य–कलाप का चारुता के साथ निर्वाह करती हैं। इन ऋतुओं से शिक्षा लेकर मैं भी अपने कार्य को यथासमय करने की आदत डालूँ, तो मैं भी रक्षित रह सकता हूँ। यदि मैं अपने राष्ट्र के उज्ज्वल अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान को उज्ज्वल करने का व्रत लूँ, तो अतीत भी मेरा रक्षक बन सकता है। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करके उसे मूर्तरूप देने के प्रयास द्वारा 'भव्य' को भी मैं अपना रक्षक बना सकता हूँ।

पाप मुझे न प्राप्त हों। यदि मैं दृढ़ता धारण लूँ कि किसी भी अवस्था में पाप के वशीभूत नहीं होऊँगा, तो पाप सदा मुझसे दूर रहेगा। परिणामतः नैतिक दृष्टि से मैं सुरक्षित रहूँगा। मृत्यु भी मुझे न प्राप्त हो। यों तो जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु से ग्रस्त होता ही है, किन्तु जब भी चाहे अकाल मृत्यु आकर हमें ग्रस ले तो हम सर्वथा असुरक्षित रहते हैं। अतः सुरक्षा के लिए अकाल मृत्यु से बचना आवश्यक है। अन्त में आत्मरक्षार्थ में वाणी के सलिल से, वेदवाणी के ज्ञानामृत से, स्वयं को अच्छादित करता हूँ। जैसे शीतल–पवित्र जल का पान और उसमें स्नान श्रम और सन्ताप को मिटाकर हमारी रक्षा करता है, वैसे ही वेदवाणी के पवित्र ज्ञान–सलिल में स्नान भी हमारे अज्ञान–मूलक दुःख–द्वन्द को हरकर हमारा रक्षक बनता है। अतः मैं वेदवाणी के निर्मल ज्ञान–सरोवर में डूबकी लगाता हूँ और सब भीतियों से रहित, सब अविद्याओं से मुक्त तथा सब कर्त्तव्य–बोधों से स्फूर्ति पाकर पूर्ण सुरक्षित हो जाता हूँ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने "हितभुक् मितभुक् ऋतभुक" पर कथा सुनाते हुए ऐसी वस्तुएँ खाओ, जो आपको शरीर के लिए अच्छी हैं। केवल खाने के लिए मत जियो। जीने के लिए खाओ। जिह्वा के स्वाद में फँसकर पेट में कूड़ा–करकट न भरते जाओ। यह सोचकर खाओ कि जो खाते हो, उससे लाभ क्या होगा? "जिह्वा को वश में रखिए" पर कथा सुनाते हुए कहा जिह्वा को पता नही हम क्या–क्या खाकर किस तरह अपना नाश करते हैं और अपनी मानवता को खो बैठते हैं। "उठाओ, गिराओ नहीं" पर कथा सुनाते हुए कहा ऐसा भोजन खाओ जिससे दूसरों को उठाया जा सके। किसी को गिराने के लिए भोजन मत खाओ।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

जाको राखे साइयाँ

देहली में 'तेज' समाचारपत्र निकलता है न, उसके संपादक थे–श्री देशबन्धु गुप्त। बहुत अच्छे, बहुत, प्यारे सज्जन थे वे। 'तेज' के संपादक भी थे और भारत के संपादकों की जो कान्फ्रेंस का वार्षिकोत्सव हो रहा था। उसमें सम्मिलित होने के लिए वायुयान में बैठे, कलकत्ता की ओर चल दिए। इसी वायुयान में महात्मा गांधी के सुपुत्र श्री देवदास गांधी भी जाना चाहते थे। वे भी संपादक–कान्फ्रेंस के नेता थे; 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के मैनेजिंग सम्पादक भी। परन्तु उन्हें वायुयान में सीट नहीं मिली। कई सिफ़ारिशें कराईं। काफ़ी दौड़–धूप की। कुछ परिचित यात्रियों से भी कहा–"मुझे आज ही कलकत्ता पहुँचना है। बहुत आवश्यक कार्य है। आप आज की बजाय कल चले जाइए। अपनी सीट मुझे दे दीजिए।" परन्तु किसी ने उनकी बात नहीं मानी। कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

देवदासजी निराश होकर घर वापस आए। बहुत दुःख के साथ उन्होंने अपने एक मित्र से कहा–"देखो जी, कैसा समय आ गया है! मैं इन लोगों की कितनी सेवा करता हूँ! जब भी आवश्यकता होती है, दौड़े–दौड़े मेरे पास आते हैं। अब मुझे थोड़ी–सी आवश्यकता पड़ी है, तो किसी ने मेरी बात नहीं सुनी।"

वायुयान उनकी शिकायत से रुका नहीं। पालम हवाई अड्डे से उड़ा; आकाश में पहुँचा; कलकत्ता की ओर जाने लगा। परन्तु डमडम के अड्डे पर पहुँचा तो चहुँ ओर इतनी धुन्ध थी कि नीचे उतर नहीं सका। देर तक वह चक्कर लगाता रहा। उसका पायलट प्रयत्न करता रहा कि कहीं पर धुन्ध कम हो तो वह नीचे देख सके, परन्तु ऐसा कोई स्थान नहीं मिला। नीचे उतरने का प्रयत्न करता हुआ वह वायुयान समुद्र के किनारे पहुँच गया। पायलट को पता नहीं लगा कि नीचे घना जंगल है। तनिक–सा नीचे होकर यान एक वृक्ष में उलझा, उससे अगले वृक्ष से टकराया और फिर कितने ही वृक्षों को तोड़ता–फोड़ता, चकनाचूर करता हुआ पूरी शक्ति के साथ भूमि पर जा गिरा। उसके पेट्रोल का टैंक फटा। पलभर में सारा यान जल उठा। उसके यात्री जल उठे। कुछ ही देर के पश्चात् वे सब मर चुके थे। हमारे देवदासजी अब भी बहुत दुःखी थे; अब भी ईश्वर के, सारे संसार के अन्याय की चर्चा कर रहे थे। तभी तार द्वारा यान के नष्ट होने पर यात्रियों के मरने का समाचार 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के कार्यालय में पहुँचा तो देवदासजी चौंक उठे। वे चिल्लाकार बोले–"यह क्या हुआ?" पूरा समाचार पढ़ा तो सिर झुक गया। धीरे–से बोले–"तुमने बहुत कृपा की भगवन्, मुझे यान में स्थान नहीं मिलने दिया। यदि सीट मिल जाती, यदि मैं भी उस यान में होता तो उस समय मेरा भी ओम् तत्–सत् हो जाता।"

सुनो मेरे भाई! भगवान् की आँख बहुत दूर तक देखती हैं। आप नहीं जानते कि वह क्या करना चाहता है। आप केवल उस समय के कष्ट को देखते हो; उसे नहीं जानते जिसे वह जानता है। इसलिए मत करो शिकायतें! भगवान् के दरबार में किसी के साथ अन्याय नहीं होता, किसी को दण्ड नही मिलता।....इस विश्वास में न्यूनता न आने दो कि ईश्वर जो कुछ करता है, तुम्हारी भलाई के लिए ही करता है। उसपर विश्वास करो!

एक बार मेरे पिताजी बहुत रुग्ण हो गए। मुझे विदित हुआ तो मैं लाहौर से जलालपुर जट्टाँ की ओर चल पड़ा। गाड़ी में सवार होने से पूर्व अपने छोटे भाई लाला त्रिलोकचन्द को 'खारियाँ' में तार दे दिया कि पिताजी रुग्ण हैं और मैं वहाँ पहुँच रहा हूँ। लाला त्रिलोकचन्द खारियाँ में वकालत करते थे। तार पहुँचा तो वे कचहरी में खड़े एक अभियोग के सम्बन्ध में वाद–विवाद कर रहे थे। तार को पढ़ते ही उन्होंने मुन्शी से कहा–"अभी सवा तीन बजे हैं। साढ़े तीन बजे गुजरात के लिए लारी जाती है। लारीवाले को कहो कि मेरे लिए एक सीट

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

वैदिक वाङ्मय में गणतन्त्रीय स्वतंत्रता की अवधारणा

● डॉ. धर्मवीर सेठी

15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण करते प्रधानमंत्री और 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस पर भारत की राजधानी नई दिल्ली से राजपथ पर ध्वजारोहण करते एवं सेना के तीनों अंगों के विभिन्न दस्तों से सलामी लेते हुए राष्ट्रपति को जब देखा तो मन में विचार उठा कि क्या कभी हमारे प्राचीन मनीषियों ने भी इस विषय पर मनन किया था और यदि हाँ, तो उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का क्या अर्थ हो सकता है?

कभी किसी वर्ष को जब भ्रष्टचार, लूट–खसोट, मँहगाई, राजनैतिक अनैतिकता, स्कैम, शिष्टाचार हीनता का वर्ष कहा जाता है तो मन में विचार उठता है कि क्या स्वतंत्रता का अभिप्राय है। (सर्व प्रकारेण) नियंत्रण ? स्वराज्य अथवा स्वतंत्रता और गणराज्य से अभिप्रेत है गण अर्थात्सामाजिक–नियंत्रण। परन्तु खेद है कि हम अनुशासन, नियम–पालन, न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के निर्देशों को ताक पर रख कर अपने आप को उनसे ऊपर समझने लगे हैं। येन–केन प्रकारेण धनार्जन और ख्याति–प्राप्ति हामरे लक्ष्य बन चुके हैं। शायद इसी कारण देश में त्राहि–त्राहि मची हुई है।

ऐसी स्थिति में यजुर्वेद अध्याय 22 के 22वें मंत्र को उद्धृत करने की इच्छा जागृत होती है जिससे गणतंत्र का वास्तविक स्वरूप ज्ञात हो सके:

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः यूरऽइषव्यो ऽतिव्योधी महारथे जायताम्
दोग्ध्रीधेनुर्वोढ़ानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णुरथेष्टा
सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे–निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तात्
योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

वैदिक ऋचा का हिन्दी भावानुवाद भी प्रस्तुत है:

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौवें, वृष अव आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
वलवान्सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों, औषध अमोध सारी।
हो योगाक्षेम–कारी, स्वाधीनता हमारी।।

सर्व प्रथम द्विज अर्थात् राष्ट्रीय नेतृत्व कैसा हो, इसकी चर्चा है। वे तेजस्वी, मनीषी, परमपिता परमात्मा के सच्चे अर्थों में प्रतिनिधि बनकर नेतृत्व करने वाले होने चाहिए; क्षत्रिय अर्थात् सेना के तीनों अंगों मे ऐसे शक्तिशाली नौजवान हों जो शत्रु समूह को चने चबवा सकें– 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्ध किसी सीमा तक इसके उदाहरण हो सकते हैं। गौ (माता) की राष्ट्र में रक्षा होनी चाहिए जिससे उनके दुग्ध से राष्ट्र के युवकों का पोषण हो सके। बैल और घोड़े भी शक्तिशाली हों अर्थात् इन शब्दों के प्रतीकात्मक रूप से अभिप्राय है कि देश में पुश–पक्षियों की सर्व प्रकारेण रक्षा हो न कि देश में बाघों को बचाने की मुहिम जारी करनी पड़े।

राष्ट्र को जीवन्त ररखने वाली तो नारी ही होती है जिसे माता की संज्ञा दी जाती है। 'माता निर्माता भवति'। यहाँ तक कि हमारे देश को 'माता' कहकर पुकारा जाता है जैसे 'भारत माता ग्राम वासिनी' या 'भारत माता की जय' आदि। विश्व में शायद की किसी अन्य देश को ''माता'' की संज्ञा प्रदान की जाती है इससे भलीभाँति अनुमान लगाया जा सकता है कि राष्ट्र की अस्मिता नारी जाति पर निर्भर करती है। उसी ने तो विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत युवक–युवतियों को जन्म देकर, सही ढंग से लालन–पालन कर इस योग्य बनाया। वही बनाने और बिगाड़ने वाली होती है।

राष्ट्र रक्षक योद्धा बलवान और सभ्य होने चाहिएँ। सन्तति को भी आदर्श बनना होगा। जो बालिकाओं का बलात्कार करने वाले होंगे तो राष्ट्र को शर्मिन्दा ही करेंगे। आए दिन ऐसे घिनौने समाचार पढ़कर एक ही प्रश्न मन में उठता है कि हम (राष्ट्रभक्त) किधर जा रहे हैं?

प्राकृतिक दृष्टि से यद्यपि भारतवासियों को छः विभिन्न ऋतुओं का आनन्द मिलता है परन्तु महत्वपूर्ण है वर्षा का जल। इसीलिए ऋचा कहती है कि बादलों को इच्छानुसार बरसना चाहिए। जिससे पानी की कमी न हो, सूखा न पड़े, सब प्रकार के ताप दूर हो सकें। ऐसा होने से वनस्पतियाँ भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो सकेंगी और औषधियाँ कारगर होंगी।

मंत्र के अन्तिम दो शब्द 'योग क्षेम' अत्यन्त सारगर्भित हैं। राष्ट्रहित के लिए जिस वस्तु की कमी हो उसे प्रयत्नपूर्वक ग्रहण करना होगा (योग) और जो भी कल्याणकारी हमें प्राप्त हो चुका है उसकी सम्यक्भाव से रक्षा (क्षेम) करना, न कि अपने देश की गोपनीय (Secrets) को चन्द सिक्कों के लिए दूसरे देशों में बेच देना अथवा भ्रष्टाचार के माया' चाल से ऐसे फँसना जैसे देश की चिन्ता ही न हो।

बड़े स्वाभिमान से हमने अपना 69 वा गणतंत्र मनाया, परन्तु हमारा गणतंत्र वेद–विहित कसौटी पर खरा उतरता है? समय आ गया है कि इस पर पुनर्विचार करने का मन्त्र द्रष्टाराः, ऋषियों का आशीर्वाद प्राप्त करने का क्योंकि हमारे आर्यावर्त के पास वैदिक साहित्य की धरोहर है।

A–1055 सुशान्त लोक–I
गुरुग्राम (हरियाणा)
मो. 9811174584

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

रखे। मैं बहस समाप्त करके अभी आता हूँ।" किन्तु बहस हो गई कुछ लम्बी। साढ़े तीन बजे समाप्त नहीं हुई। बसवाले ने समाचार भेजा–"समय हो गया।" लाला त्रिलोकचन्द ने कहा–"थोड़ी देर ठहरो, मैं अभी आता हूँ।"

लारीवाले ने कुछ समय तक और प्रतीक्षा की। पौने चार बज गए, किन्तु बहस फिर भी समाप्त नहीं हुई। दूसरे वकील ने कोई नई बात उपस्थित कर दी। उसका उत्तर देना आवश्यक था। लाला त्रिलोकचन्द ने लारीवाले के पास फिर सन्देश भेजा, परन्तु चार बजे भी छुटकारा नहीं मिला। चार बजे तक प्रतीक्षा करते के बाद लारीवाला यह कहकर चला गया कि अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती; दूसरे यात्री भी तंग आ गए हैं।

कोई साढ़े चार बजे के लगभग लाला त्रिलोकचन्दजी को छुटकारा मिला। बाहर आकर जब देखा कि लारीवाला चला गया है, तो बहुत क्रोध में आए और अपने भाग्य को कोसा–"पिताजी रुग्ण हैं। मुझे जलालपुर पहुँचना है। अब पहुँचूँ कैसे?" लारीवाले को कोसा–"इसे मैंने कत्ल के मुकद्दमे में बचाया था। यह बदला दिया है इसने? थोड़ी देर प्रतीक्षा भी न कर सका। कैसे रूखे लोग हैं! अब मैं क्या करुँ? कैसे पहुँचूँ पिताजी के पास?"

इस प्रकार सोचते हुए वे निराश और उदास बने सड़क पर खड़े थे कि जेहलम की ओर से एक मोटर आती हुई दिखाई दी। मोटर के स्वामी लाला त्रिलोकचन्द के मित्र थे; मोटर में स्वयं बैठे थे, गुजरात जा रहे थे। लाला त्रिलोकचन्द को देखकर उन्होंने मोटर खड़ी कर ली। त्रिलोकचन्द से पूछा–"इतने उदास क्यों हो?"

उन्होंने सारी बात कह सुनाई और यह भी बताया कि जलालपुर में उनका पहुँचना आवश्यक है। मित्र ने कहा–"इसमें घबराने की क्या बात है? लारी चली गई तो जाने दो, यह मोटर तो है! बैठो इसमें, मैं तुम्हें लेकर चलता हूँ।"

मोटर में बैठकर खारियाँ से छः मील की दूरी पर पहुँचे थे कि एक भयानक दृश्य उनके सामने आ गया। एक लारी सड़क की दाईं ओर उलटी पड़ी थी। दस यात्री मर गए थे। लारी चकनाचूर हो गई थी। वृक्ष टूट गया था। यह वही लारी थी, जो लाला त्रिलोकचन्द को बिना लिए चली आई थी; जिसके न मिलने के कारण लाला त्रिलोकचन्द उदास और निराश हुए थे। उसी समय उन्होंने भगवान् को धन्यवाद दिया और हाथ जोड़कर कहा–"धन्य हो भगवन्! तुमने बचा लिया मुझे।"

अरे! मत समझो कि सब–कुछ तुम्हीं जानते हो। तुमसे अधिक ज्ञानी वह प्रभु है। उसकी आँख बड़ी है, तुम्हारी छोटी। जहाँ तक वह देखता है, वहाँ तक कभी तुम देख नहीं पाते। इसलिए उसपर भरोसा करो। वेद में मन्त्र आता है, जिसका भाव यह है–"हे अग्निदेव! ले चल मुझे सीधे रास्ते से। ले चल उधर, जिधर तू चाहता है।"

बिहार में भूकम्प आया तो मैं कलकत्ता में था। महात्मा हंसराज जी का तार वहाँ आया कि बिहार में पहुँचो। देखो कि सहायता और सेवा का कार्य कैसे करना है। पण्डित ऋषिरामजी और सेठ दीपचन्दजी पोद्दार के परिवार के श्री आनन्दीप्रसाद को साथ लेकर मैं बिहार पहुँचा। मुंगेर के नगर में जाकर देखा कि वहाँ हज़ारों लोग दब गए हैं। दोपहर के समय भूचाल आया। दुकानें खुली थीं। ग्राहक दुकानों से सामान खरीद रहे थे। भूकम्प ने सबको गिरती दीवारों और छतों के नीचे दबा दिया। दुकानदार भी दब गए, ग्राहक भी।

मलबे को हटाने का कार्य आरम्भ हुआ तो पहले दिन कुछ लोग जीवित निकले, कुछ घायल, कुछ सिसकते हुए, कुछ ठीक। तीसरे–चौथे दिन भी कुछ लोग जीवित निकले, बाकी केवल लाशें। ज्यों–ज्यों दिन बीतते गए, त्यों–त्यों लाशें मिलने लगीं। सोलहवें दिन एक मकान का मलबा उठाया गया, तो एक आदमी बिल्कुल अच्छा–भला बिल्कुल जीवित निकल आया। उसे देखकर हम कुछ आश्चर्यचकित हुए। किस प्रकार ईश्वर–विश्वास हमारे हृदयों में झूम के जाग उठा, यह तो हम ही जानते हैं। हमने उससे पूछा कि इतने दिन जीवित कैसे रहा?

वह बोला–"मैं केले बेचता हूँ। केलों का ढेर अपने पास रखे बैठा था कि पृथिवी हिल उठी। छत का शहतीर मेरे ऊपर आ गिरा। बाकी छत उसके ऊपर आई, इसलिए मुझे

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

श्रद्धा का दामन पकड़ें

● महात्मा चैतन्यस्वामी

श्रद्धा, विश्वास और प्रेम ये सफलता की तीन सीढ़ियाँ है। श्रद्धा सफलता का प्रथम सूत्र है। जितनी अधिक जिस कार्य के प्रति श्रद्धा होगी उतनी ही सफलता मिलेगी। ऋग्वेद में कहा है– **श्रद्धया विन्दते वसु** अर्थात् श्रद्धा से ही व्यक्ति सब वसुओं अर्थात् वस्तुओं व धनों को प्राप्त करता है.. .**देवाः श्रद्धा उपासते**–देव–वृत्ति के लोग श्रद्धा का उपासन करते है, वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही वे यज्ञशील बनते हैं, प्राणायाम के अभ्यासी श्रद्धा की उपासना करते हैं, वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही वे योगी बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं....डाँवाडोल नहीं होते, श्रद्धा से ही हृदय में दृढ़संकल्प की भावना बनती है, वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही व्यक्ति दृढ़संकल्पी बन पाता है, श्रद्धा से ही अग्नि प्रदीप्त की जाती है और श्रद्धा से ही आहुति दी जाती हैं। ज्ञान, कीर्ति, श्री आदि ऐश्वर्यों की शिरोमणि–भूत श्रद्धा को हम स्व–वचन से सबको प्राप्त कराते हैं। महाभारत में कहा गया कि श्रद्धा न रखना परम पाप है जबकि श्रद्धा अनेक पापों से मुक्त कराने वाली है। श्रद्धालु मनुष्य वैसे ही पाप को त्याग देता है जैसे साँप पुरानी कैंचुली को त्याग देता है... यजुर्वेद में आया है कि परमात्मा ने सत्य व असत्य दोनों के रूपों को देखकर सत्य और असत्य को अलग–अलग छांट दिया। झूठ में अश्रद्धा को रखा और सत्य में श्रद्धा को रखा।

व्यक्ति के मन में दो प्रकार के भाव उठते हैं, एक को श्रद्धा कहते हैं, दूसरे को अश्रद्धा। 'श्रत' का अर्थ है सत्य, 'धा' का अर्थ है धारण करना। असत्य धारणा से रस्सी को साँप समझकर व्यक्ति डरेगा मगर जब सत्य से परिचय होगा तो वह निर्भय हो जाएगा। इसलिए स्वाभाविक रूप से ही व्यक्ति सत्य में ही श्रद्धा करता है असत्य में नहीं। मगर अज्ञान–दोष के कारण व्यक्ति वास्तविक श्रद्धा से वंचित रह जाता है। वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि ज्ञानेन्द्रियों व अन्तःकरण के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है। इस अविद्या के कारण ही हमारी सत्य के प्रति श्रद्धा नहीं हो पाती है...आँख में खराबी होगी तो व्यक्ति म को भ तथा अग्ने को अग्रे पढ़ लेगा... वास्तव में साधारण व्यक्ति श्रद्धा,अश्रद्धा और अन्धश्रद्धा में भेद नहीं कर पाता है। इसके लिए मुख्यतः दो कसौटियाँ दी गई हैं–दृष्टवा और व्याकरोत्। दृष्टवा से भाव है कि हम उसे ही सत्य मानें जो दर्शनों में विवेचित प्रमाणादि से सही सिद्ध होता है और व्याकरोत् से भाव है व्याकरण की कसौटी पर परखना। व्याकरण का अर्थ है सत्य को झूठ से अलग कर देना। जो उपरोक्त कसौटियों पर खरा उतरता है वह सत्य है ओर उसके प्रति ही श्रद्धा होनी चाहिए। जो इन कसौटियों के विपरीत है वह असत्य है और उसके प्रति अश्रद्धा होनी चाहिए। अब रही अन्ध–श्रद्धा। यह अन्ध–श्रद्धा क्या है? जिसे न ज्ञान है और न ही व्याकरण की कसौटी पर परखने की कला है वह अन्ध–श्रद्धा का शिकार हो जाता है। इस प्रकार जितनी भी अवैदिक मान्यताएँ है वे सब अन्ध–श्रद्धा के अन्तर्गत ही आती हैं और दुर्भाग्य से आज अधिकतम व्यक्ति इसी में भटक रहे हैं....अनेक प्रकार के मत, मजहब, सम्प्रदाय तथा गुरुडम प्रथा ये सभी अन्धश्रद्धा के ही अन्तर्गत आते हैं। किए हुए पाप कर्मों का क्षमा हो जाना, किसी जड़ वस्तु के आगे सिर झुकाना, भूत–प्रेत, डाकिनी–शाकिनी, पीर–पैगम्बर आदि के भुलावे भी इसी के अन्तर्गत आ जाते हैं क्योंकि ये सब उपरोक्त कसौटियों में कहीं भी टिक नहीं पाते हैं मगर फिर भी अज्ञानी, अज्ञानियों को लूट रहे हैं तथा लोग अन्ध–श्रद्धा में भटक कर अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर रहे हैं....

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने बहुत ही सुन्दर एक वाक्य संसार के लोगों को दिया है– 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। 'उद्यत रहने का अर्थ है कि वेद व दर्शनादि आर्ष ग्रन्थों में सत्य और असत्य की परख करने के लिए जो कसौटियाँ दी हैं उन पर मनन और चिन्तन करके जो सत्य है उसे ग्रहण करना चाहिए और असत्य को छोड़ देना चाहिए। इसी में मानव मात्र का कल्याण है। जब उपरोक्त कसौटियों पर परखा जाएगा तो आजकल जो भी पाखंड और आडम्बर फैल रहे हैं वे स्वतः ही ध्वस्त हो जाएँगे। बल्कि जो व्यक्ति उपरोक्त कसौटी के अनुसार चिन्तन करेगा उसे स्वाभाविक रूप से ही इन सब पाखंडों के प्रति अरुचि हो जाएगी तथा सत्य के प्रति ही रुचि बनेगी क्योंकि आत्मा सत्य ही चाहता है असत्य नहीं... मगर व्यक्ति अपने किसी न किसी अज्ञान, लाभ व लोभ के कारण असत्य में श्रद्धा कर बैठता है यही अन्ध–श्रद्धा है। सभी प्रकार के पाखण्डादि, जब इन्हें ज्ञान और व्याकरण की कसौटी पर परखेंगे तो ये धराशायी हो जाएँगे इसलिए स्वार्थी लोग सत्य ज्ञान और व्याकरण से ही डरने लगते हैं क्योंकि उनकी वे धारणाएँ ही ध्वस्त होने लगती हैं ज़िनके आधार पर पाखण्ड का आश्रय लेकर वे अपनी स्वार्थ–सिद्धि करते हैं.... जब कोई व्यक्ति किसी को ठग रहा होता है तो वास्तव में उसे तो पता होता है कि मैं असत्य बोल रहा हूँ मगर दूसरों को उस ज्ञान से वंचित रखकर ठगता रहता है.....

गीता के सोलहवें अध्याय में श्रीकृष्ण जी ने (16–24) कहा कि जब व्यक्ति के सामने यह स्थिति पैदा हो जाए कि हम क्या मानें और क्या न मानें तो उसके लिए–**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं (तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते)** अर्थात् वहाँ पर शास्त्र ही प्रमाण हैं। महर्षि दयानन्दजी ने भी कहा है कि वेद और वेदानुकूल स्मृतियाँ ही प्रमाण हैं। मनु महाराज ने भी कहा है–**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्** तथा **धर्म जिज्ञासामानानाम् प्रमाणं परमंश्रुतिः** इसलिए वे कहते हैं–**नास्तिको वेदनिन्दकः।** फिर उन्होंने धर्म के चार मूल स्रोत बताए हैं–**वेदःस्मृति सदाचारः स्वयस्य च प्रियामात्मनः।।** 1. वेद, 2. वेदाध्ययन करने वाले पारंगत विद्वानों द्वारा रची गई वेदानुकूल स्मृतियाँ एवं शील (वेद विरुद्ध स्मृतियाँ व शील नहीं), 3. सदाचार अर्थात् उन वेदानुकूल स्मृतियों को रचने वाले आप्त लोगों का वेदानुकूल आचरण, 4. जो आत्मा को प्रिय है अर्थात् जिस कार्य में आत्मा को भय, शंका और लज्जा का अनुभव न हो बल्कि उत्साह, उमंग और प्रसन्नता के भाव पैदा हों, वे ही कार्य करने चाहिए। उपरोक्त पूरे विवेचन से श्रद्धा, अश्रद्धा और अन्धश्रद्धा के भाव पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाते हैं। अन्ध–श्रद्धा का पूरी तरह से त्याग करना चाहिए अन्यथा व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही चला जाता है। सत्य के प्रति श्रद्धा करनी चाहिए मगर यहाँ पर हम अश्रद्धा के महत्व के बारे में भी थोड़ा सा चिन्तन करते चलें। महाभारत के एक श्लोक का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्दजी व्यवहारभानु में लिखते हैं–'श्रद्धा है–परमात्मा, सत्यविद्या और धर्म के प्रति दृढ़ विश्वासी होना। 'ऋ0भाष्य भूमिका वेदोक्त धर्म विषय प्रकरण में मन शब्द की व्याख्या करते हुए...शतपथ ग्रन्थ के **कामः संकल्पो..** .14–4 वाक्य का प्रमाण देकर...श्रद्धा के साथ–साथ अश्रद्धा का भी उल्लेख किया गया है... श्रद्धा की तरह अश्रद्धा का भी साकारात्मक पहलु हमारे ध्यान में आता है। उनके अनुसार श्रद्धा–जो ईश्वर और सत्य–धर्म आदि शुभ गुणों में निश्चय से विश्वास को स्थिर रखना है, उसको श्रद्धा जानना और अश्रद्धा–अविद्या, कुतर्क, बुरे काम करने, ईश्वर को न मानना और अन्याय आदि अशुभ गुणों से सब प्रकार से अलग रहने का नाम अश्रद्धा है। महर्षि पतंजलि जी ने भी **वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्** सूत्र के माध्यम से प्रकट किया है–जो अनिच्छनीय है, अनादर्श है, योग में बाधक है, उनके प्रति अप्रीति अर्थात् अश्रद्धा का भाव होना प्रतिपक्ष भावना है... भावार्थ रूप में हम इसे इस प्रकार समझ सकते हैं कि हम यदि भद्र चाहते हैं जो भद्र के प्रति हमारी श्रद्धा बननी चाहिए और अभद्र छोड़ना चाहते हैं तो अभद्र के प्रति हमारी अश्रद्धा का होना अनिवार्य है....जहाँ अभद्र के प्रति अश्रद्धा होगी वह भद्र तो आएगा ही मगर यदि हम अभद्र हो नहीं छोड़ेंगे, उसके प्रति श्रद्धा बनाए रखेंगे तो भद्र का प्रवेश कैसे हो पाएगा। इसीलिए उपनिषदों में श्रद्धा को कल्याणी मगर अश्रद्धा को अति कल्याणी कहा है...

महादेव, सुन्दरनगर,
जिला मण्डी, हि.प्र.–175018

पावन-पावन दयानन्द

● इन्द्रजित् देव

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का व्यक्तित्व व कृतित्व पतित पावन ही नहीं, पावन–पावन भी था। भक्त अमीचद, वकील मुंशीराम, स्वामी सर्वदानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय के पिता राधा कृष्ण, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा आनन्द स्वामी के पिता, मथुरा की वैश्या आदि कईं ऐसे व्यक्ति हुए हैं जो महर्षि के प्रवचनों को सुनकर, उनसे मिलकर, अथवा उनके साहित्य को पढ़कर अपना पतित या नास्तिक जीवन त्याग पावन व्यक्तित्व के धनी बने थे। इनके जीवन की घटनाएँ वर्णित की जाएँ तो लेख का विषयान्तर हो जाएगा परन्तु यह प्रमाणित है। वे महर्षि पतित–पावन थे। हमारा इस लेख का विषय पावन–पावन दयानन्द है। इसलिए पूर्वोक्त व्यक्तियों का नामोल्लेख करके आगे बढ़ते हैं।

ईश्वर, वेद धर्म, यज्ञ, व्यास ऋषि, कपिल ऋषि, योगेश्वर कृष्ण, छः शास्त्र, नारी, शूद्र आदि अनेक पदार्थ, विषय व वर्ग हैं जो पवित्र थे परन्तु विधर्मियों, अज्ञानियों, स्वार्थियों व दुराग्रहियों ने इन्हें ऐसे रूप में प्रस्तुत कर रखा था कि ये अपवित्र ही होते थे। कुतर्कों, ग़लत व्याख्याओं, प्रक्षिप्त कथाओं व अवैदिक ग्रन्थों के आधार पर पतीत व उपेक्षणीय प्रतीत हो रहे थे। महर्षि दयानन्द ने यह सब देखा व जाना तो अपने ग्रन्थों, उपदेशों, पत्रों तथा शास्त्रार्थो द्वारा इन पर लगाए आरोपों–आक्षेपों को दूर किया तथा इनके वास्तविक, शूद्र व पवित्र रूप में पुनर्प्रतिष्ठित किया अर्थात् पावन को पुनः पावन बनाने का प्रंशसनीय कार्य किया।

वेद ईश्वरीय वाणी है। ईश्वर पवित्रतम है। उसके कार्य, विचार व व्यवस्था सम्पूर्ण व पावन हैं। ईश्वर के बाद यदि कोई पवित्र है तो वह वेद ही हैं। पवित्र वस्तु से पवित्र की रचना है। मनु महाराज ने **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** कहकर वेदों की महत्ता घोषित कर दी है। सृष्टि के आरंभ से लेकर महाभारत काल तक मनुष्य जाति के मन–मस्तिष्क पर वेदों का एक छत्र राज रहा है। वेद–ज्ञान लेकर आर्यो ने चक्रवर्ती राज किया व नए–नए आविष्कार किए परन्तु महाभारत के उपरान्त सब कुछ बदल गया। वेद से श्रद्धा व आस्था कम हो गई क्योंकि कथित ब्राह्मणों व आचार्यों ने ऐसे–ऐसे ग्रन्थ बना लिए जिनमें सत्य व वेदानुकूलता न थी। कईं वेद भाष्यष्कारों ने वेदों में माँसभक्षण, सुरापान, पशुबलि, इतिहास, अश्लीलता व तर्कहीनता के अंश प्रस्तुत किए। पुराने आचार्यों में माध्वाचार्य ने ऋग्वेद के थोड़े–से अंशों का ही भाष्य किया। वेद व श्रुति के नाम से आदि शंकराचार्य उपनिषदों के ही प्रमाण देते रहे। महीधर, उव्वट तथा सायण आदि ने वेदों के जो भाष्य किए, उनके विषय में इतना लिखना ही पर्याप्त है कि इन्हें पढ़कर किसी भी विचारशील व सत्याग्रही व्यक्ति की वेदों पर तनिक भी श्रद्धा नहीं रही थी। इन्हीं के आधार पर विधर्मियों तथा पाश्चात्य लेखकों ने वेदों पर सीधे आक्षेप किए। एक पाश्चात्य लेखक ने तो यहाँ तक लिखा– "वेद गडरियों के गीत हैं।" अशुद्ध वेदभाष्य के प्रमाण अनेक हैं परन्तु विस्तारभय के कुछ ही प्रमाण प्रस्तुत हैं–

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽअजायत।।
यजु. 31/11

इस मन्त्र में समाज को मनुष्य–शरीर से उपमा देकर ईश्वर ने कहा है कि मुख के समान मुख्य गुण व कर्मों से सम्पन्न होने से ब्राह्मण वर्ष उत्पन्न हुआ। भुजाओं के समान बल–पराक्रमचक्र क्षत्रिय वर्ण उत्पन्न किया। शरीर के मध्यभाग जङ्घाओं के समान कृषि–वाणिज्यादि गुणों से सम्पन्न वैश्यवर्ण उत्पन्न किया तो शरीर के सबसे नीचे भाग पग के समान शारीरिक श्रम के काम करने वाले शूद्र वर्ण को पैदा किया। "यह मंत्र प्रेम और सामाजिक एकता का पुनीत संदेश देता है परन्तु महर्षि से पूर्व उलटी खोपड़ी वाले भाष्यकारों ने यह अनर्थ किया कि ईश्वर के मुख से ब्राह्मण, बाहों से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए। यह अर्थ तर्कहीन है व सामाजिक वैमनस्य व राष्ट्रीय पतन का मुख्य कारण बना। मृतक श्राद्ध, मूर्तिपूजा, मांस–भक्षण, अश्लीलता व इतिहास परक अर्थ भी भाष्यकारों ने कर रखे थे। बुद्ध की तरह महर्षि भी इन अर्थों के आधार वेद–विमुख हो सकते थे परन्तु अपने तप व स्वाध्याय के बल पर उन्होंने इन अर्थों के प्रति विद्रोह किया। बुद्ध की तरह वे नास्तिक नहीं बने। अपने नाम से नया सम्प्रदाय भी नहीं चलाया। उनके विचार में मन्त्रों के अर्थों में जो सही लिखा है, वही ग्राह्य है तथा जो गलत है वह त्याज्य है। इस आधार पर सभी पाखंड व अन्धविश्वास स्वतः गिर जाते हैं। उन्होंने 2 नए शब्दों की स्थापना की– आर्ष तथा अब तक संस्कृत का प्रत्येक शब्द प्रमाणिक माना जाता था परन्तु महर्षि ने इसको अस्वीकार कर दिया। दूसरी खोज उन्होंने यह की कि वेद के सभी शब्द रुढ़ि न होकर यौगिक हैं। निरुक्तकार यास्क ऋषि की भी यही घोषणा थी। महर्षि ने किस प्रकार वेदमंत्रों के अशुद्ध अर्थों को शुद्ध किया, इसका प्रमाण यह है–

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि
चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि।
नाभि ते शुन्धामि मेरुं ते शुन्धामि
पायुं ते शुन्धामि चरित्रास्ते शुन्धामि।।
यजु. 6–14

उव्वट व महीधर के किए अर्थ–यजमान–पत्नी पशु के समीप बैठकर मरे पशु के प्राण के आयतन को शुद्ध करती है अर्थात् पान्नेजन पात्र से जल लेकर पशु के अंगों का स्पर्श करते हुए कहती है– हे पशु! मैं तेरे वागेन्द्रिय (=वाणी), प्राणी, नेत्र, कान, मूत्रेन्द्रिय, मलेन्द्रिय तथा पैर आदि सब इन्द्रियों को शुद्ध करती हूँ।" यह कैसा वीभत्स शोधन है?

इस मंत्र का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द ने इसका देवता विद्वान् को माना है तथा जो अर्थ किए हैं, वह इस प्रकार है– हे शिष्य! मैं विविध शिक्षाओं से तेरी वाणी को शुद्ध अर्थात् धर्मानुसार करता हूँ। तेरे नेत्रों को शुद्ध करता हूँ अर्थात् इनसे तुम वस्तुओं, व्यक्तियों को सही रूप में देखो व उचित व्यवहार करो। जिससे नाड़ि आदि बन्धे हैं, उस नाभि को पवित्र करता हूँ जिससे मूत्रोत्सर्ग आदि किए जाते हैं, उस लिङ्ग को पवित्र करता हूँ। जिससे तेरी रक्षा की जाती है, उस गुदेन्द्रिय को पवित्र करता हूँ। तेरे समस्त व्यवहारों को पवित्र, शुद्ध तथा धर्मानुसार करता हूँ। गुरुपत्नी के पक्ष में सर्वत्र "करती हूँ", यह मानना चाहिए।

इस मंत्र में शिक्षा का उच्चादर्श दर्शित है। आचार्य का दायित्व केवल अक्षरज्ञान देना ही नहीं, अपितु शिष्य की समस्त इन्द्रियों में पवित्रता का आधान तथा व्यवहार की शुद्धि भी आचार्य का दायित्व है। निरुक्तकार यास्काचार्य ने भी 'आचार्यः कस्तादाचारं ग्राहयति' लिखकर आचार्य का कर्त्तव्य शिष्यों के आचार को उन्नत बताया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि मृत प्राणी के शरीर में गोलक ही रहते हैं, इन्द्रियाँ नहीं,बोलने से वाक् जीवन देने से प्राण, देखने से चक्षु, सुनने से काम आदि अंग इन्द्रियाँ कहाती हैं। अन्यथा नहीं कहाती। जब इनमें ये शक्तियाँ नहीं रहतीं, तब वे वाक् प्राण, चक्षु व कानादि नहीं माने जाते। तब इनका शोधन कैसा? महर्षि ने इस मन्त्र को जीवितों से जोड़ा है, जो सर्वथा युक्त है। महर्षि ने वेद के मस्तक से हिंसा के कलंक को सर्वथा हटाया। विस्तार भय से अधिक प्रमाण देना उपयुक्त नहीं। जिन्हें अधिक प्रमाण चाहिए, उन्हें 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का स्वाध्याय करना चाहिए।

वेदों के प्रति महर्षि की श्रद्धा व साधनापूर्ण किया भाष्य अनुपम है। 'गडरियों के गीतों' का लेवल हटाकर इन्हें महर्षि ने, सर्वजनहिकारी, अत्यन्त ग्राहय व पावन–पवित्र ईश्वरीय वाणी सिद्ध किया। महर्षि व्यास के शब्दों में 'नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है परन्तु महर्षि दयानन्द के विचारों में श्रेष्ठतर मनुष्य को श्रेष्ठतम बनाने के लिए वेदज्ञान परम सहायक है। उनके भाष्य से ही ईश्वर, धर्म, आत्मा, प्रकृति तथा जगत् का पवित्र स्वरूप पुनर्स्थापित हुआ। वेदों में निहित रहस्यों व तत्वों को संसार के समक्ष शुद्ध, रूप में रखकर उनके सम्बन्ध में व्याप्त अज्ञानान्धकार दूर करने का श्रेय अधिकांशतः ऋषि दयानन्द को ही जाता है। इस विषय में अरविन्द घोष का कथन उल्लेखनीय है– "वेदों का अन्तिम तथा पूर्ण प्रामाणिक भाष्य कोई भी क्यों न हो, दयानन्द का स्थान उपयुक्त शैली के प्रथम आविष्कारक के रूप में सर्वोच्च है। उसने अपनी दृष्टि से पुराने अज्ञान तथा भ्रम से सत्य का अन्वेषण किया। जिन वेदों के द्वार को समय ने बन्द सा कर दिया था उसकी चाबियों को उसने पा लिया था।" लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष अनंत शयम् अच्चगांर के शब्दों में 'महर्षि दयान्द की सबसे बड़ी देन यह है कि अब प्रत्येक बात की सत्यता की परख के लिए वेद को ही प्रमाण माना जाता है।" प्रसिद्ध आर्य कवि उदय सिंह ठाकुर के शब्द भी सच्ची बात कहते हैं–

वेद के भेद कहाँ खुलते अरु पुराणन की प्रति मोटी न होती।
गप्पों की ही तुलती तोल धड़ाधड़ खोटे–खरे की कसौटी न होती।।

महर्षि से पूर्व के आचार्यों शंकर, रामानुज, माधवाचार्य या निम्बार्क आदि की पहुँच गीता, वेदान्त दर्शन व उपनिषद् तक ही रही। वेद तक पहुँचने का प्रयास उन्होंने नहीं किया, न ही उन्हें वेदों के ऊटपटांग भाष्य देखकर इन्हें शुद्ध करने की चिन्ता ही हुई। यह चिन्ता हुई तो केवल दयानन्द को हुई। स्वामी दीक्षानन्द के शब्दों में 'दयानन्द यदि देह है तो वेद उसका आत्मा।' पवित्र वस्तु की पवित्रता को पवित्र व्यक्ति ही जान सकता है। संसार की पवित्रतम वाणी को अपवित्रता, अवैज्ञानिकता को पवित्र व्यक्ति ही जान सकता है। संसार की पवित्रतम वाणी वेद को अपवित्रता, अवैज्ञानिकता, तर्कहीनता, अश्लीलता, अनुपयोगिता तथा गर्वहीनता के भंवरजाल से निकाल वेद को पावन, पवित्र, वैज्ञानिक, तर्कयुक्त, सभ्य, परमोपयोगी सिद्ध करने वाले महर्षि को सश्रद्ध नमन!

वेदों का डंका दुनियाँ में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
करते थे हमेशा चीख–2 अपमान जो पावन वेदों का,
सिर उनका वेदों के आगे झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने।। –प्रकाशार्य

पौराणिक पण्डितों ने 18 पुराण बनाकर वेदों के स्थान पर प्रतिष्ठित कर रखा था। ये पुराण पृथक्–2 काल में एक पृथक–2 व्यक्तियों द्वारा रचे गए थे

परन्तु प्रचार यह किया गया था कि इनके रचनाकार ऋषि व्यास जी हैं। राजा भोज के राज्य में मार्कण्डेय पुराण और शिवपुराण बनाकर प्रचारित किए– व्यास जी के नाम पर। इसका समाचार राजा भोज को मिला तो उसने रचनाकारों के हाथ कटवा दिए थे तथा यह आदेश दिया था कि जो भी व्यक्ति अपना ग्रन्थ रचे, वह अपने नाम से प्रचारित करे, ऋषि–मुनियों के नाम से नहीं। पुराणों में मूर्ति पूजा, तीर्थों के प्रमाण हैं तो कथित भगवानों के चरित्र दोषों का वर्णन भी है। विष्णुभगवान् जालन्धर नामक राक्षस से पराजित होकर उसकी पत्नी वृन्दा से जालन्धर का मेक–अॅप करके दुराचार करता है तो ब्रह्मा अपनी पुत्री से ही सम्भोग करता है। जो मनुष्य प्रातःकाल में 'शिव' अर्थात् लिङ्ग व उसकी मूर्ति का दर्शन करे तो रात्रि में किया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्मभर का, सायं में दर्शन करने से सात जन्मों के पाप छूट जाते हैं। 'शिवपुराण' में शैवों ने शिव को परमेश्वर मानकर विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र व सूर्यादि को उसके दास बताए हैं तो 'विष्णुपुराण' में विष्णु को परमात्मा माना और शिव आदि को विष्णु के दास। देवी भागवत् पुराण में देवी को परमेश्वरी जबकि शिव, विष्णु आदि उसके किङ्कर बनाए। 'भागवत' में विष्णु की नाभि से कमल, कमल से ब्रह्मा, ब्रह्मा के दाहिने पग से अंगूठे से स्वायंभाव और बाएँ अंग से सत्यरूपा राणी, ललाट से रुद्र और मरीचि आदि पुत्र, उनसे दक्ष प्रजापति, उनकी तेरह लड़कियों का विवाह कश्यप से, उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव, अदिति से आदित्य, विनती से पक्षी, कद्रू से सर्प, सरमा से कुत्ते का स्याल आदि और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊँट, गधा, भैंसा, घास, फूँस और बबूल का वृक्ष काँटे सहित उत्पन्न हो गया।"

महर्षि दयानन्द ने महर्षि व्यास के नाम पर पुराणों में लिखी असत्य, तर्कहीन, अश्लील व अवैज्ञानिक बातों पर दुःखी हो "सत्यार्थ प्रकाश" के एकादश समुल्लास में लिखा– "जो आज पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथाएँ कभी न लिखते और उससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाए हैं, उनमें व्यास जी के गुणों का लेश भी नहीं था। वेदशास्त्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास जी सदृश्य विद्वानों का काम नहीं, किन्तु यह काम विरोधी, स्वार्थी, अविद्वान पामरों का है।" दयानन्द द्वारा व्यास ऋषि को दी इस **'क्लीन चिट'** से सिद्ध है कि व्यास जी के प्रति उनके मन में कितनी अधिक पावन भावना थी। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त इतिहास में किसी अन्य व्यक्ति ने आज तक व्यास ऋषि की पावनता पर लगी धूल हटाने का प्रयास नहीं किया। इतिहास इस के लिए महर्षि का सदैव ऋणी रहेगा। पुराणों में एक पावन महापुरुष को निकृष्ट, अश्लील, चोर, जार, भोगी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका नाम श्री कृष्ण हैं। उनकी सोलह हज़ार, एक सौ आठ रानियाँ थीं। अमोध रति ईश्वर कृष्णा की जितनी पत्नियाँ थीं, उन सब में उन्होंने प्रत्येक में से दस–दस पुत्र किए। श्रीमद् भागवत् के अनुसार राम–क्रीड़ा के समय उनके साथ व्यभिचार का स्पष्ट उल्लेख है। दशम स्कंद के अध्याय 48 में कुब्जा के साथ व्यभिचार का उल्लेख है। राधा वृषभानु वैश्य की कन्या थी। उसने राधा का विवाह रायाण वैश्य से कर दिया। रायाण यशोदा का भाई था अर्थात् राधा कृष्ण जी की मामी लगती थी। (ब्रह्मवैवर्त पुराण) परन्तु इसी पुराण में राधा–कृष्ण के गुप्त अनुचित सम्बन्ध का भी वर्णन है। कृष्ण पर कुत्सिंत व धूर्ततापूर्ण आरोप लगाए हैं। पर स्त्रीगमन का द्वार पुराणों ने कृष्ण के माध्यम से खोल दिया तो उनके भक्तों को क्यों संकोच? कृष्ण की वास्तविक पत्नी रुक्मिणी का कोई नाम नहीं लेता परन्तु कल्पित प्रेयसी राधा की ही पूजा होती है। धर्म की आड़ में यह व्यभिचार को प्रोत्साहन देना नहीं तो और क्या है? प्रमाण यह है–

परदाररता ये च ये नरा अजितेन्द्रियाः।
मथुरा वासिनः सर्व दे देवा न विग्रहाः।।

– वाराह पुराण 166/61

अर्थात् मथुरा के निवासी दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार करने वाले सभी कामी लोग देवता है, यह निर्विवाद है।

नैतिकता, मर्यादा, आदर्श व सिद्धांतों का स्पष्ट हनन आप पुराणों के कृष्ण के चरित्र में देख सकते हैं। अंकुशता की सभी मर्यादाएँ तोड़ने वाले पुराणों में कृष्ण चरित्र के साथ खुलकर खिलवाड़ किया गया तो भी हिन्दू जाति की आँख नहीं खुली। ईसाई प्रचारकों ने कृष्ण के पुराणमय चरित्र को आधार बनाकर सामान्य व अशिक्षित वर्ग में ईसा मसीह की पवित्रता व महानता का बहुत प्रचार किया क्योंकि श्री कृष्ण का यह चरित्र समाज को निकृष्ट प्रेरणा दे रहा है। ईसाई मिशनरी आज भी अपने कार्यक्रमों में ईसामसीह व कृष्ण जी के चित्र लटकाकर दर्शकों व श्रोताओं से पूछते हैं– "इनमें एक हमारा ईश्वर ईसा तुम्हारे पाप लेकर फाँसी पर लटक गया जबकि दूसरा, तुम्हारा ईश्वर नदी में स्नान कर रही नारियों के वस्त्र लेकर पेड़ पर चढ़कर बाँसुरी बजाता है। स्नान कर रही नारियाँ उससे वस्त्र माँगती है परंतु वह उन्हें नग्न देखता व बाँसुरी ही बजाता रहता है। बताओ! इन दोनों में कौन परोपकारी व महान् है?" सामान्य लोगों का उत्तर क्या होगा, यह आप सहज ही सोच सकते हैं। योगेश्वर कृष्ण के चरित्र का यह प्रभाव बड़े–2 उपदेश को, संन्यासियों तथा जन सामान्य पर रहा परन्तु इसका निराकरण महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त किसी ने नहीं किया। "सत्यार्थ प्रकाश" के एकादश समु. में वे लिखते हैं– "देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त–पुरुषों के सद्दश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए है। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रास मण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी पर लगाए हैं।" एक पावन महापुरुष पर लगे आरोपों को झुठलाकर उसको **उज्ज्वल करैक्टर सर्टीफ़िकेट** देकर उसे पावन–पवित्र घोषित करने के महर्षि के सद्प्रयास की जितनी भी कृतज्ञता ज्ञापित की जाए, वह न्यून है।

महर्षि दयानन्द से पूर्व अधिक लोग छः शास्त्रों में परस्पर सैद्धान्तिक विरोध देखते, मानते थे। पावन शास्त्रों को अस्वीकारते थे परन्तु महर्षि ने इसका खण्डन करके उन्हें परस्पर अविरोधी घोषित किया– "विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवार होवे। छः शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है– मीमांसा (दर्शन) में– 'ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्मचेष्टा न की जाए।'वैशेषिक (दर्शन) में– 'समय न लगे बिना बने ही नहीं।' न्याय (दर्शन) में– 'उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता।' योग (दर्शन) में 'विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाए तो नहीं बन सकता।' सांख्य (दर्शन)– 'तत्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता।' और वेदान्त (दर्शन) में– 'बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके।' इसलिए सृष्टि छः कारणों से बनती है। उन छः कारणों की व्याख्या एक–एक ही एक–एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे छः पुरुष मिलकर एक छप्पर उठाकर भित्तियों पर धरें, वैसा ही सृष्टि रूप कार्य की व्याख्या छः शास्त्रकारों ने मिलकर पूरी की।"– सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समु.।

संसार में वैदिक दर्शन कुल छः ही हैं। इन में कमियाँ, त्रुटियाँ तथा परस्पर विरोध है तो वेदों को छोड़कर हमारे पास दार्शनिकता के नाम पर शेष बचता ही क्या है? महर्षि ने स्वयं इनका गहन स्वाध्याय किया व उन्हें शास्त्रों में परस्पर विरोधी सिद्धांत नहीं मिले। परिणामतः वे इनके वकील बनकर आगे आए तथा डटकर इनका बचाव व समर्थन किया। अपने ग्रन्थों में यत्र–तत्र महर्षि ने अपने कथन को सही सिद्ध करने हेतु इन दर्शनों के अनेकानेक प्रमाण देकर इनके प्रति अपनी गहन निष्ठा भी प्रकट की है। पावन दर्शनों पर लगे आरोपों के उत्तर देकर इनकी पावनता को पुनर्प्रतिष्ठित किया।

ऋषियों व उनके ग्रन्थों के प्रति महर्षि की निष्ठा का प्रमाण स.प्र. के तृतीय समुल्लास में उपलब्ध है– "ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे बड़े विद्वान्, सब शास्त्रविद् और धर्मात्मा थे।" कपिल ऋषि को ऋषि दयानन्द से पूर्व बहुत लोग उनके ग्रन्थ 'साख्य दर्शन' के कुछ सूत्रों की ग़लत व्याख्या के आधार पर अनीश्वरवादी कहते थे। महर्षि ने स.प्र. के सप्तम समुल्लास में लगभग डेढ़ पृष्ठों में कपिल ऋषि के कुछ सूत्रों के आधार पर उनका बचाव करते हुए लिखा है– 'इसलिए जो कोई कपिलाचार्य को अनीश्वरवादी कहता है, जानो बही अनीश्वरवादी है, कपिलाचार्य नहीं।" पावन कपिलाचार्य व अन्यों के प्रति महर्षि की श्रद्धा व सत्यनिष्ठा कैसी पावन थी, इसका पता उनके इस कथन से मिलता है– "यदि मैं कपिल और कणाद के युग में पैदा हुआ होता तो उनके आश्रमों में मैं झाड़ू लगाने की योग्यता भी नहीं रखता।" पावन को पावन सिद्ध करने वाले पावन दयानन्द की स्मृति को सादर प्रणाम!

महर्षि दयानन्द से पूर्व नारी की स्थिति बड़ी निन्दनीय तथा घृणित थी। किसी ने उसे पाँव की जूती कहा था तो अन्य ने नरक का द्वार माना था एक ने उसे पुरुषों की खेतियाँ कहा तो दूसरे ने विधवा होने पर पति के शव के साथ जल मरने की आज्ञा दी थी। नारी से ईश्वर प्रदत्त सभी अधिकार छीन लिए गए थे। न वह हवन कर सकती थी, न ही यज्ञोपवीत धारण–कर पाती थी। पढ़ने के अवसर उसे प्रदान नहीं किए जा रहे थे तो युवतियों को वृद्धों के साथ ब्याह दिया जाता था। घरेलू, सामाजिक या राष्ट्रीय विषयों पर सोचने, बोलने व निर्णय करने के अधिकार भी छीन लिए गए थे। वह केवल बच्चे उत्पन्न करने वाली एक मशीन बन रह गई थी। बच्चे उत्पन्न करना, घरेलू कार्य करना व पति को परमेश्वर मानकर उसकी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करना– यही उसका धर्म था, यही उसकी नियति भी। भ्रष्ट और अपावन स्थिति में जी रही नारी जाति को नरक से निकालने वाला कोई न था।

इस स्थिति में महर्षि ने महसूस किया कि नारी प्रायः स्वभाव से कोमल व हृदय से पुरुष की अपेक्षा अधिक पावन व करुणामयी होती है व समाज तथा राष्ट्र का पतन इसलिए हुआ है क्योंकि उसे अपावन स्थिति में रखकर ईश्वर प्रदत्त अधिकारों व पावन कर्त्तव्यों से वंचित कर दिया गया है। "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास

शेष पृष्ठ 07 पर

बच्चों को संस्कारवान बनाने में कुछ प्राथमिक बातें

● मनमोहन कुमार आर्य

आज का युग आधुनिक युग कहलाता है जहाँ क्या वृद्ध, क्या युवा और क्या बच्चे, सभी पाश्चात्य संस्कारों में दीक्षित हो रहे हैं। दूर के ढोल सुहावने की भाँति बिना जाने समझे पाश्चात्य जीवन शैली उन्हें अच्छी लगती है और वेश–भूषा और विचार ही नहीं भाषा और भोजन आदि भी उनका बिगड़ रहा है या बिगड़ गया है। ये लोग भारतीय वैदिक संस्कृति से दूर होकर अपने जीवन की सुख शान्ति भंग कर लेते हैं और बाद में रोगी व तनाव से ग्रस्त होकर असमय मृत्यु का ग्रास बनते हैं। आज की युवा पीढ़ी आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वथा शून्य देखी जाती है। किसी को न तो वेद और उसकी शिक्षाओं सहित उनके महत्व का ज्ञान है और न ही ईश्वर व आत्मा के स्वरूप का ज्ञान है। आज की युवा पीढ़ी को जीवन के लक्ष्य व उद्देश्य का भी पता नहीं है। उन्हें यह भी पता नहीं कि उनका यह जन्म उनके पूर्वजन्म का पुनर्जन्म है और इस जन्म में जब भी उनकी मृत्यु होगी उनके ज्ञान, संस्कार और कर्मानुसार उनका पुनः पुनर्जन्म अर्थात् नया जन्म होगा। जन्म–मरण और पुनर्जन्म की यह यात्रा हमेशा चलती रहेगी। इसे विश्राम मिलेगा तो प्रलय अवस्था में या फिर मोक्ष की अवस्था में। यही कारण है कि महाभारतकाल से पूर्व के समय में हमारे देश में वेदों के आधार पर मनुष्यों की जीवन शैली हुआ करती थी और उस समय सभी लोग वैदिक रीति से गुरुकुलों में पढ़ते थे और उनको वेद में वर्णित ईश्वर व आत्मा के सत्य स्वरूप सहित अपने कर्तव्य–कर्मों का ज्ञान होता था और उसके अनुसार ही उनका आचरण भी हुआ करता था।

सन्तान वैदिक संस्कारों से युक्त हो इसके लिए ऋषि दयानन्द ने वेद के आधार पर मनुष्य के गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का विधान किया है। यदि माता–पिता चाहते हैं कि उनके घर में संस्कारित सन्तान आए तो उन्हें सन्तान के जन्म से बहुत पहले अपने आचार व विचारों पर ध्यान देना होगा। उन्हें वैदिक धर्म व संस्कृति का अध्ययन कर उसकी मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर आचरण करना होगा। यदि वे ऐसा करते हैं अर्थात् वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन बनाते हैं तो अनुमान किया जा सकता है कि उनके घर में संस्कारवान् आत्मा पुत्र व पुत्री के रूप में जन्म ले सकती है। इसमें एक मुख्य बात यह होती है कि अच्छी सन्तान की प्राप्ति के लिए माता–पिता को संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए। इसी को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। ब्रह्मचर्य में संयम के साथ जीवन व्यतीत करते हुए वेदों का अध्ययन करना व ईश्वरोपासना आदि कर्मों का अनिवार्य रूप से आचरण करना आवश्यक होता है। ऋषि दयानन्द ने गर्भाधान संस्कार का विधान 'संस्कार विधि' पुस्तक में किया है जो इस विषय के प्राचीन आचार्यों के विधानों के अनुकूल है। इसे विस्तार से जानने के लिए 'संस्कार विधि' में इस संस्कार का अध्ययन करना चाहिए। 'संस्कार विधि' पर आर्यसमाज के उच्च कोटि के कीर्तिशेष विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने संस्कार भास्कर टीका लिखी है। वहाँ इस संस्कार के समर्थन में अनेक जानकारियाँ एवं प्रमाण दिए गए है। उसका अध्ययन करने से लाभ होता है। सुसन्तान के निर्माण के लिए माता–पिता को अपनी सन्तान के पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार भी करना चाहिए। श्रेष्ठ बालक व बालिका के निर्माण के लिए माता–पिता को आधुनिक शिक्षा सहित उन्हें संस्कृत भाषा, व्याकरण सहित वेदादि ग्रन्थों का अध्ययन भी कराना चाहिए। पाठ्य ग्रन्थों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय एवं व्यवहारभानु आदि ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं।

आर्यसमाज के अनेक विद्वानों महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी ब्रह्ममुनि, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती आदि ने लघु ग्रन्थों की रचनाएँ की हैं। उनकी शिक्षा व पाठ भी बच्चों को कराया जाना चाहिए। बच्चों को योगासनों सहित ध्यान का अभ्यास भी कराया जाए तो यह उनके जीवन में उपयोगी होता है। बच्चों को भोजन में देशी गाय का दुग्ध व यथोचित मात्रा में फलों का सेवन भी कराया जाना चाहिए। माता–पिता द्वारा सदाचार के नियमों की शिक्षा भी बच्चों को दी जानी चाहिए। बच्चे जीवन में चोरी, व्यभिचार, असत्य कथन आदि न करें, इसके दुष्परिणामों से भी बच्चों की बौद्धिक क्षमता के अनुसार ज्ञान दिया जाना चाहिए। बच्चों को बचपन से ही माता–पिता द्वारा अपने साथ बैठाकर सन्ध्या व यज्ञादि कराए जाने चाहिएँ। इससे बच्चे इन्हें सीख जाते हैं और उन पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं। बच्चों को स्वाध्याय की आदत भी डालनी चाहिए। माता–पिता उन्हें बच्चों से संबंधित किसी वैदिक सदाचार की पुस्तक का वाचन करने के लिए कह सकते हैं और उसकी बातों को उन्हें समझा भी सकते हैं। ये बातें देखने में तो मामूली हैं परन्तु इनका प्रभाव जीवन भर रहता है। बच्चों को व्यायाम व योगासन भी सीखाने आवश्यक हैं। यह अभ्यास भी उनके बलशाली व स्वस्थ जीवन का आधार बनता है। बच्चों को अच्छे विचार ही मिले, बुरे विचार न मिलें, इसके लिए बच्चों को बुरे स्वभाव वाले अध्यापकों व पारिवारिक जनों की संगति से दूर रखना चाहिए। उन्हें पढ़ाने वाले अध्यापक या अध्यापिकाएँ सज्जन व चरित्रवान् होने चाहिएँ। उनका व्यवहार अपने शिष्यों पर माता–पिता व आदर्श आचार्य के अनुरूप होना चाहिए। बच्चे जब कुछ बड़े हों और उनमें समझने की क्षमता हो तो उन्हें मूर्तिपूजा के दोषों के बारे में भी संक्षिप्त रूप से बता देना चाहिए। बच्चे बड़े होकर फलित ज्योतिष व जाति–पाति आदि अनुचित विचारों व व्यवहारों में न फंसे, इसका भी आवश्यकतानुसार ज्ञान बच्चों को कराया जाना चाहिए। माता–पिता को अपने सन्तानों को टीवी, मोबाइल आदि की लत से भी बचाना चाहिए। वह कम्प्यूटर व इण्टरनैट आदि का दुरुपयोग न करें व कुसंगति में न फँसे, इसका भी उन्हें विशेष ध्यान रखना है। बच्चों को यह बताया जाना चाहिए कि उन्हें अपने माता–पिता सहित सभी आचार्यों एवं बड़ों के प्रति आदर भाव रखना है व उन्हें सम्मान देना है।

यदि इतना भी हम करते हैं तो हमें लगता है कि यह बच्चे की उन्नति व सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है। बचपन में ही बच्चों को बाल सत्यार्थप्रकाश व बाल ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित ऋषि दयानन्द कृत व्यवहारभानु व संस्कृत वाक्य प्रबोध का अध्ययन कराया जाना चाहिए। इन ग्रन्थों की शिक्षाओं से बच्चों को परिचित करा देना लाभदायक होता है। यदि बच्चें बचपन में इन तीन ग्रन्थों को पढ़ व समझ लेंगे तो इससे उन्हें जीवन भर अनेक प्रकार से लाभ होगा और वह अज्ञान व अन्धविश्वासों से बच सकते हैं। इस प्रकार से माता–पिता अपने बच्चों का निर्माण करें और साथ ही संस्कृत व हिन्दी के अध्ययन सहित आधुनिक विषय अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडीकल शिक्षा आदि का अध्ययन करें तो भी वह जीवन में सफल हो सकते हैं। हम आशा करते हैं कि आज के समय में यदि माता–पिता अपने बच्चों के निर्माण में उपुर्यक्त बातों का ध्यान रखेंगे तो उनके बच्चों को लाभ होगा। हमने कुछ प्राथमिक बातें ही लिखी हैं। इन्हें जान लेने व बड़े होने पर अच्छे आर्यसमाजों में जाने से हम समझते हैं कि बच्चे व समाज दोनों को ही लाभ होगा।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

☞ पृष्ठ 06का शेष

पावन–पावन....

में महर्षि ने लिखा– जितना माता से संतानों को उपदेश व उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम (व) उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए मातृमान अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या (सन्तान की) न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।" महर्षि ने ये विचार महाभारत से उद्घृत किए– 'नास्तिमातृसमो गुरुः' अर्थात् माता समान कोई गुरु नहीं है। नारी से जब पढ़ने का अधिकार ब्राह्मणों ने छीन रखा था, तो वह संतान को कैसे पढ़ा सकती थी? महर्षि से पूर्व ब्राह्मणों ने कपोलकल्पना से यह श्रुति वाक्य प्रचारित करके स्त्रियों तथा शूद्रों से वेद तथा अन्य ग्रन्थ पढ़ने का अधिकार छीन रखा था– "स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः।" महर्षि ने यह भीपूछा कि 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्', इस श्रोतसूत्र के होते हुए झूठे वाक्य बनाकर स्त्रियों से उनका वेदादि पढ़ने का अधिकार क्यों छीनते हो? इस सूत्र में स्पष्ट कहा है– पत्नी यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। महर्षि ने यजुर्वेद के मंत्र 26/2 का भी प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्त्री व शूद्र को भी वेद पढ़ने का अधिकार है–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

महर्षि ने मनु के इस सिद्धांत का भी समर्थन किया कि दश उपाध्याय एक आचार्य के बराबर, सौ आचार्य एक पिता समान तथा एक सहस्र पिता एक माता के तुल्य हैं। इसके अतिरिक्त 'पंचायतन पूजा' के अन्तर्गत स.प्र. के एकादश समुल्लास में यह क्रान्तिकारी विचार भी प्रस्तुत किया कि स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। चितौड़ में एक बार चलते हुए महर्षि ने गली में खेल रही एक कन्या को देखा तो उसके आगे अपना शीश झुका दिया था। नारी को सिर का मुकुट माना। यह संक्षिप्त वितरण पर्याप्त है। अतीत में नारी को बहुत उच्च आदर, अधिकार व पावनता प्राप्त थी तथा मध्यकाल में सब चौपट हो गया था। महर्षि ने गहन अध्यन व ठोस प्रमाणों के आधार पर क्रान्ति लाकर नारी को पुनः पावन, पवित्र, वाञ्छनीय स्थान दिलाया। ऐसे क्रान्तिकारी सुधारक दयान्द के प्रति समाज को चिर ऋणी रहना होगा।

चूना भट्ठियाँ, सिटी सैन्टर के निकट,
नहर वाली सड़क, यमुनानगर (हरियाणा)
मो. 09466123677

गतांक से आगे....

राष्ट्रवाद और आर्यसमाज

● डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

संविधान की त्रुटियाँ

आज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के समक्ष उपस्थित संकटपूर्ण चुनौतियों का कारण संवैधानिक त्रुटियाँ भी हैं। भारतीय संविधान के निर्माण में संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत रूस और फ्रांस के संवैधानिक मान्यताओं का अधिकतर संकलन करना और भारतीय राजनीति, राज्यपद्धति, ऐतिहासिक परम्पराओं तथा अनुभव की उपेक्षा करना रहा है। हमारे संविधान की प्रमुख त्रुटि यह है कि इस देश को एक देश या राष्ट्र कहने की अपेक्षा ''राष्ट्रों का संघ'' कहा गया है। भारत सुनिश्चित सीमाओंवाला एक प्राचीन देश है। इसमें राज्यों की संख्या व आकार घटते–बढ़ते रहे हैं किन्तु संसार भर में इस देश की पहचान एक देश के रूप में होती रही है, किन्तु हमारे संविधान निर्माताओं ने ''संयुक्त राज्य अमेरिका'' (यूनाइडेट स्टेट ऑफ अमेरिका) की नकल पर इसका नाम '' द रिपब्लिक ऑफ इण्डिया'' अर्थात् ''भारत गणराज्य'' रखा। अमेरिका की नकल करना व्यर्थ था क्योंकि वहाँ पहले कुछ राज्य कायम हुए, फिर उन्होंने अपना संघ बनाया उसके पूर्व अमेरिका का एक देश के रूप में कोई अस्तित्व नहीं था इसलिए अमेरिका सही अर्थों में कुछ राज्यों का संघ है। भारत राज्यों का संघ मात्र न होकर एक प्राचीन देश है, जिसमें अनेक राज्य रहे हैं और आज भी हैं। इसे राज्यों का संघ कहना गलत है।

हमारे संविधान की दूसरी भूल इसका नाम ''इण्डिया'' रखना था, जब भारत नाम रखा गया तब राजनैतिक एवं मानसिक दासता के प्रतीक ''इण्डिया'' नाम रखने की क्या आवश्यकता थी? इण्डिया नाम को प्राथमिकता और वरीयता भी दी गई जो 'इण्डिया दैट इज काल्ड भारत' शब्दों से स्पष्ट है, भारत 'दैटहज काल्ड इण्डिया' कहा जाता, तब तो कोई बात भी होती। व्यक्तिवाचक संज्ञा को उसी रूप में दूसरी भाषाओं में भी बोला जाता है। क्या किसी अन्य देश के भी दो–दो नाम संविधान में स्वीकृत हैं?

संविधान की तीसरी त्रुटि, अल्पसंख्यकों को विशेष महत्त्व देना है। संविधान की धारा तीस इस दृष्टि से खतरनाक है। इसके अनुसार अल्पसंख्यक अपने लिए अलग से शिक्षा संस्थान चला सकते हैं, अपनी इच्छानुसार शिक्षक रख सकते हैं और महजबी (अपने सम्प्रदाय की) शिक्षा दे सकते हैं, उन्हें अपनी इस शिक्षण संस्था का सारा व्यय राष्ट्रीय कोष से मिल सकता है, परन्तु ऐसी सुविधा बहुसंख्यक वर्ग के हिन्दुओं को नहीं है। हिन्दू न तो ऐसा कोई विद्यालय खोल सकते हैं और न अपनी इच्छा से कोई अध्यापक रख सकते हैं एवं न अपने सम्प्रदाय की उसमें शिक्षा ही दे सकते हैं। यह धारा अल्पमतों के पक्ष तथा बहुमत के विरोध में है। इस प्रकार संविधान की धारा तीस ने अल्पसंख्यकों में पृथकतावाद को बढ़ावा दिया है, राष्ट्रीयता की उपेक्षा की है तथा बहुमत के साथ भेदभाव की नीति उत्पन्न की है। इस धारा के कारण ही रामकृष्ण मिशनवालों ने अपने को हिन्दू मानने से इन्कार कर दिया।

संविधान की चौथी त्रुटि शेख अब्दुल्ला के दबाव पर 37 वीं धारा का समावेश है इस धारा ने कश्मीर राज्य को मुस्लिम बहुल होने के कारण अलग संविधान और विशेष दर्जा दिया है, जिसके कारण वहाँ कोई भी व्यक्ति (जो कश्मीर निवासी न हो) जमीन नहीं खरीद सकता, रह नहीं सकता और न राजकीय नौकरी ही कर सकता है, कश्मीर का मतदाता नागरिक बनने का प्रश्न ही नहीं उठता, ऐसा भेदभावपरक नियम किसी भी प्रदेश में नहीं है, इस नीति के कारण भारत के साथ पूर्ण सामंजस्य कभी भी नहीं बिठा पाया।

मौलाना आजाद की भूमिका

स्वतन्त्र भारत में पृथकतावाद को बढ़ावा मौलवी अबुल कलाम आजाद द्वारा एवं उनके प्रभाव से पं0 नेहरु द्वारा अपनायी गई नीतियों के कारण भी मिला है आजाद भारत के प्रथम शिक्षामन्त्री बनने का मौलाना आजाद का आग्रह उनकी साम्प्रदायिक मुस्लिम मानसिकता थी। मौलाना आजाद ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय को पुनः खड़ा करने, उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने तथा उर्दू को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने में अपनी विशेष रुचि दिखायी और उल्लेखनीय भूमिका निभायी। मुसलमानों में पृथकतावाद को बढ़ावा देने तथा भारत के विभाजन की भूमि तैयार करने में अलीगढ़ विश्वविद्यालय की कुत्सित भूमिका रही। यही काम फारसी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी की ही एक शैली उर्दू ने भी किया था। स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रवाद व राष्ट्रहित का यह तकाजा था कि इन दोनों को निकाल दिया जाता अथवा इन दोनों का पूर्ण भारतीयकरण कर दिया जाता। अलीगढ़ विश्वविद्यालय का मुस्लिम अल्पसंख्यक स्वरूप को बदल देना चाहिए था और उर्दू को फारसी लिपि में लिखा जाना बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए था भारत का विभाजन होने पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के 85 प्रतिशत छात्र और अध्यापक पाकिस्तान चले गए थे, अतः स्वतन्त्र भारत में इस अराष्ट्रीय संस्था को समाप्त कर देना चाहिए था या इसका राष्ट्रवादी भारतीयकरण करना चाहिए था, किन्तु मौलाना आजाद ने इसका अल्पसंख्यक महजबी स्वरूप बनाए रखा और उसे परिपुष्ट किया। मौलाना आजाद ने देवनागरी लिपि में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का पुरजोर विरोध किया और संविधान सभा में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिए जाने पर वे बौखला गए थे और डॉ0 रघुवीर को कहा था–''तुमने बहुमत के बल पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा तो घोषित करा लिया है किन्तु मैं देखूँगा कि तुम इस निर्णय को लागू कैसे करते हो?'' अतः हिन्दी के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को इसका चरित्र बदले बिना फिर खड़ा करने में और उर्दू की फारसी लिपि को विना परिवर्तित किए, इसे प्रोत्साहन देने में सर्वाधिक निन्दित भूमिका शिक्षामन्त्री के नाते मौलाना आजाद ने निर्वहन की। यही नहीं मौलाना आजाद ने मुस्लिम मुल्लाओं की संस्था ''जमात–ए–उल्माए–हिन्द'' को मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था के रूप में भी मान्यता दिलाई।

मौलाना आजाद का जन्म अरब में तथा शिक्षा काहिरा के अलअजहर विश्वविद्यालय में हुई थी। वे मानसिक व बौद्धिक दृष्टि से भारतीय कम और अरब अधिक थे। कुरान के पण्डित होने के कारण उन पर इस्लामवाद ओर इस्लामी विस्तारवाद का प्रभाव भी बहुत अधिक था। वे चाहते थे कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान इस्लामी देश बने जैसा कि उन्होंने अपनी आत्मकथा "इण्डिया विन्स फ्रीडम" में लिखा है, उन्होंने विभाजन का विरोध मुख्यतः इसलिए किया था कि इससे इस्लाम के प्रचार का क्षेत्र सीमित हो जाएगा।

मौलाना आजाद का न हिन्दी पर अधिकार था, न अंग्रेजी पर। वे अरबी, फारसी और उर्दू के पण्डित थे। शिक्षा से उनका दूर का भी वास्ता न था। वे हिन्दी के पक्के दुश्मन थे। उन्होंने "प्रथम भारतीय साहित्य सम्मेलन" में भाषण करते हुए कहा था–"आधुनिक भारतीय भाषाओं में केवल उर्दू व बंगला ने ही अन्तरराष्ट्रीय दर्जा हासिल किया है। पिछली कुछ शताब्दियों में इन्होंने असाधारण उन्नति की है। आधुनिक हिन्दी जो अवधी व ब्रज भाषा से सर्वथा भिन्न है केवल इसी शतक में विकसित होने लगी है, यद्यपि हिन्दी का साहित्य मात्रा और परिणाम की दृष्टि से बहुत बड़ा है, किन्तु किस्म की दृष्टि से वह विश्व में स्थान पाने के योग्य नहीं है।" प्रथम तो हिन्दी को ब्रजभाषा व अवधी से बिल्कुल ही भिन्न बतलाना ही हिन्दी साहित्य में जहाँ तक स्तरीय ग्रन्थों का प्रश्न है वहाँ यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि पिछले साठ–सत्तर वर्षों मे कला, विज्ञान, दर्शन, आलोचना, कविता, कथा, साहित्य तथा शास्त्र पर हिन्दी में सैकड़ों ग्रन्थ लिखे गए हैं, जिसमें से एक पुस्तक की समता उर्दू साहित्य की कोई पुस्तक नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं के चुने गए हजारों ग्रन्थों का प्रामाणिक अनुवाद भी हिन्दी में किया गया है, अतः महत्त्व व मात्रा दोनों दृष्टियों से हिन्दी किसी भी दूसरी भारतीय भाषाओं की तुलना में आगे ही है, पीछे नहीं।

राष्ट्रीय एकता के लिए सांस्कृतिक एकता के धरातल का संरक्षण

भारत के सभी निवासियों में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना होगा। राष्ट्रहित के लिए अपने को बलिदान हो जाने की भावना राष्ट्रीय नागरिकों में होनी चाहिए, इसके लिए शिक्षा एवं प्रचार माध्यमों का उपयोग किया जाए। किसी भी भाषा, सम्प्रदाय तथा क्षेत्र विशेष के नागरिकों के मन से द्विराष्ट्रवाद, पृथकतावाद व उग्रवाद की बात निकालकर राष्ट्र की मुख्यधारा में सम्मिलित करना, हमारा कर्तव्य होना चाहिए। इस मामले में भारत के समक्ष रूस, युगोस्लाविया बल्गारिया व चीन इत्यादि देशों के उदाहरण थे। 1947 में खण्डित भारत में मुस्लिम 7 प्रतिशत से भी कम थे, रूस में 20 प्रतिशत, युगास्लाविया में 17 प्रतिशत, बल्गारिया में 12 प्रतिशत, और चीन में 5 प्रतिशत के लगभग थे। यदि भारत सरकार भी मुसलमानों का उसी प्रकार भारतीयकरण करने का प्रयास करती जैसे रूस में रूसीकरण व चीन में चीनीकरण किया गया तो सम्भवतः मुस्लिम साम्प्रदायिकता फिर न खड़ी होती। प्रत्येक प्रान्त की प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृति और उसका राष्ट्रीय योगदान से उस प्रदेश के निवासी को परिचित कराना भी आवश्यक है, जिससे उस प्रदेश के लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति तथा इस संस्कृति के निर्माण में अपने पूर्वजों के योगदान से परिचित होने का अवसर मिले, जिसके कारण उसमें गौरव व राष्ट्रीय स्वाभिमान जागे। उदाहरण के लिए कश्मीर का प्राचीन इतिहास भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल पृष्ठ है। भारतीय दर्शन, व्याकरण, इतिहास और साहित्य निर्माण में कश्मीरवासियों का योगदान कहीं अधिक है। कल्हण, भामह, उद्भट्ट, रुद्रट, मम्मट, कैय्यट, वामन, आनन्द–वर्धन, जैय्यट, उव्वट, भट्टनायक, कुन्तक, अभिनवगुप्त, महिमभट्ट, क्षेमेन्द्र, मुकुलभट्ट, नागेशभट्ट, रुय्यक, वाग्भट्ट, प्रभृति दर्शन, व्याकरण, साहित्य और इतिहास के सुप्रसिद्ध आचार्यों ने भारतीय सांस्कृतिक एकता के धरातल को संरक्षित और पोषित करने का गुरुत्तर कार्य किया है। कश्मीर संस्कृति भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ केसर होता है, ऐसी स्वर्गोपम भूमि की महिमा–उसकी गौरवपूर्ण विरासत से क्या हमने, हमारी शिक्षा–नीति ने, हमारी पाठ्यपुस्तकों ने, प्रसार माध्यमों ने अथवा

भारतीय सरकार ने कश्मीरियों को अवगत कराया है? इसी प्रकार पंजाब आर्यों की भूमि है। पंच नदियों का प्रदेश (संस्कृत में आपः शब्द जलवाचक है, जिसे अरबी, उर्दू व फारसी में आब भी कहा जाता है।) अविभाजित पंजाब वेदों की क्रीड़ाभूमि रहा। विश्व का सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण पाणिनि पंजाब शलातुर (लाहौर) में उत्पन्न हुए थे। वेदों में सबसे अधिक प्रयुक्त "इन्द्र" शब्द आज भी पंजाबियों में सर्वाधिक प्रचलित है एवं पंजाबी नामों में सबसे अधिक नाम इन्द्र से जुड़े हुए हैं– धमेन्द्र, जितेन्द्र, महेन्द्र, हरिन्दर, बलविन्दर, इन्दरजीत, तलविन्दर आदि। "असम" नाम भौगोलिक है जो उसकी विषमभूमि का परिचायक है। इसी प्रकार शंकर, निम्बार्क, मध्व, रामानुज एवं बल्लभ जैसे विश्वप्रसिद्ध आचार्यों से सम्बद्ध दक्षिण के प्रदेशों की विशेषता भी हमें पढ़ानी चाहिए थी। *क्या इस प्रकार के प्रत्येक प्रदेश के* ऐतिहासिक, पुरातात्विक और सांस्कृतिक दाय के स्वर्णिम पृष्ठों से प्रत्येक प्रदेशवासियों और भारतीयों का अवगत होना राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से अनिवार्य नहीं है? पिछले 65 वर्षो से भारतीय सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। 64 वर्षों से हमने देश में राष्ट्रीयता विकसित नहीं होने दी है। तब न सही तो, अब सही।

संविधान द्वारा समानाधिकार प्रदान करना

भारत के सभी नागरिकों के लिए समान कानून–सम्बन्धी संविधान की धारा 44 पर अमल किया जाए और इसके लिए संविधान की धारा 370 और 30 जो देश के राज्यों और जनता में सम्प्रदाय के आधार पर भेदभाव का मूल है, जो समाप्त किया जाए। संविधान की धारा 30 में मजहवी अल्पसंख्यकों को शिक्षण संस्थाएँ खोलने में उनमें शिक्षा के स्वरूप आदि के मामले में ऐसे अधिकार दिए गए हैं जो देश के बहुमत समाज को नहीं दिए गए। इसी प्रकार कश्मीर को मुस्लिम बहुल होने के कारण संविधान में धारा 370 जोड़कर उसे विशेष दर्जा दिया गया, जिसके अनुसार उन्हें सारे देश में हर प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं, परन्तु शेष भारत के लोगों को वहाँ पर बसने या मतदाता बनने का भी अधिकार नहीं। ऐसे भेदभाव वाले संवैधानिक धाराओं को समाप्त किया जाए जिससे पूर्णतया समान राष्ट्रीय नागरिक संहिता बन सके।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का अलगाववादी चरित्र बदलना

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक अलगाववादी चरित्र को बदला जाए क्योंकि यह पूरी तरह से भारत के करदाताओं के रुपए पर चलता है, इसमें मजहवी तालीम, मस्जिद का निर्माण और रख–रखाव पर जो व्यय किए जाते हैं, उसे बन्द किया जाए इसे पूरी तरह राष्ट्रीय स्वरूप दिया जाए।

उर्दू को द्वितीय राजभाषा न बनाना

उर्दू हिन्दी की एक शैली है, इसकी सारी क्रियाएँ वही हैं जो हिन्दी की हैं। परन्तु फारसी लिपि ने इसे एक विदेशी और अलगाववादी स्वरूप दे दिया है। हिन्दी की एक शैली होने के कारण किसी भी राज्य में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान देने की आवश्यकता नहीं है।

सेक्यूलरिज्म का कड़ाई से पालन

राज्य द्वारा मजहब अथवा पूजा विधि के आधार पर नागरिकों के बीच भेदभाव न करना धर्मनिरपेक्षता का संसार भर में सर्वमान्य अर्थ है। उदाहरणार्थ– ब्रिटेन एक पोषित ईसाई राज्य होने के लिए बावजूद धर्म निरपेक्ष राज्य माना जाता है क्योंकि वहाँ सबके लिए समान कानून है और शिक्षा इत्यादि मामलों में मजहब के आधार पर नागरिकों में भेदभाव नहीं किया जाता। इसके विपरीत भारत में धर्म निरपेक्षता के नाम पर मुसलमानों की हर अलगाववादी और साम्प्रदायिक माँग को माना जाता है। मुस्लिम महिलाएँ जो मुस्लिम आबादी की 50 प्रतिशत है, को समान नागरिक राष्ट्रीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया है। मुस्लिम शरीयत को कानून का जामा पहनाना धर्मनिरपेक्षता का खुला उल्लघंन है। यह देश भारतीय संविधान के अनुसार चलाया जाएगा या याज्ञवल्क्य स्मृति और कुरान की शरीयत के अनुसार यह राष्ट्र नियामकों को सोचना है। मुस्लिम अपराधियों को जब दण्ड विधान शरीयत के अनुसार नहीं दिया जाता जब तलाक और बहुविवाह में शरीयत को मानने का क्या हक है? सभी राष्ट्रीयतावादी, प्रगतिवादी, नैतिक मूल्यवादी और स्त्री–पुरुष के समानाधिकार की माँग करने वाले राष्ट्रीय तत्त्वों को इस पर विरोध प्रकट क़रना चाहिए, तभी धर्मनिरपेक्षता का पूर्णतया पालन हो सकता है।

अल्पसंख्यक आयोग बनाम राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग–

अल्पसंख्यक आयोग के बनने से भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला है। मुस्लिम सम्प्रदायवाद का कुप्रभाव अन्य मजहवी अल्पसंख्यकों पर भी पड़ रहा है। पंजाब में केशधारी सिखों के एक वर्ग में साम्प्रदायिकता और अलगाववाद का प्रभाव मुस्लिम सम्प्रदायवाद का सीधा परिणाम है। कईं अकाली खुलकर कहते हैं कि यदि मुसलमान पाकिस्तान लेकर भी खण्डित हिन्दुस्तान में विशेष सुविधाएँ प्राप्त कर सकते हैं तो हम खालिस्तान लेकर भी शेष भारत में अपने लिए विशेष स्थान क्यों नहीं ले सकते? जो खलिस्तान की बात नहीं करते, वे भी कश्मीर के मॉडल पर भारत के अन्दर एक सिख बहुल राज्य बनाकर उसके लिए विशेष दर्जा चाहते हैं।

ईसाइयों का एक वर्ग भी साम्प्रदायिकता के लाभों से लाभान्वित होने के लिए मुस्लिम लीग के रास्ते चलने लगा है। असम राज्य में मिजोरम और नागालैण्ड के नाम दो अलग राज्य कायम होना ईसाई सम्प्रदायवाद की भी विजय है। ये दोनों ईसाई बहुल राज्य हैं और ईसाई चर्च को उनमें विशेष स्थान प्राप्त है। अतः किसी भी प्रकार के अल्पसंख्यक आयोग को न बनाकर उसके बदले सभी नागरिकों पर लागू होने वाले राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन होना चाहिए।

वैदेशिक नीति को राष्ट्रीय हित के अनुसार बनाना–

विदेश नीति के क्षेत्र में इस्राइल से भी मित्रता के सम्बन्ध कायम करना चाहिए। तिब्बत को चीन के सैनिक शिकंजे से मुक्त कराने के लिए कूटनीतिक प्रयास करना तथा पाकिस्तान व बंगला देश के प्रति जैसे को तैसे की नीति अपनानी चाहिए। भारत को महाशक्ति बनाने के लिए यथासम्भव उपाय करना होगा। नेपाल और बर्मा जैसे हिन्दू व बौद्ध देशों को अधिक निकट लाना चाहिए।

अग्निर्ज्योति, चाणक्यपुरी
अमेठी, उ.प्र. 227405
मो. 09415185591

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

चोट नही लगी। तभी एक बार पृथिवी फिर हिली। मेरे ऊपर गिरे मलबे में से एक ओर से हवा आने लगी, पता नहीं किस ओर से; परन्तु उस हवा ने मुझे मरने से बचा लिया। तभी पृथिवी एक बार फिर हिली, दुकान का फर्श टूट गया। उससे पानी उछल पड़ा। इतने दिनों तक मैं इस पानी को पीकर और केले खाकर जीवन व्यतीत करता रहा। कल केले समाप्त हो गए। आज पानी थोड़ा रह गया। मैंने समझा कि मैं बचूँगा नहीं, परन्तु तभी मलबे के ऊपर कुदालों की आवाज़ आने लगी। आपने मुझे बाहर निकाल लिया।"

इस व्यक्ति को देखकर मेरे हृदय ने पुकारकर कहा–

जाको राखे साइयाँ, मार सके नहीं कोय।
बाल न बाँका कर सके, जो जग बैरी होय।।

तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!

महर्षि दयानन्द अन्तिम साँस ले रहे थे। सारे शरीर में दर्द था। लोग अशांत थे कि कब क्या होगा। उनके मुखमण्डलों पर उदासी थी, आँखों में आँसू। महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा–"कौन–सी तिथि है आज? कौन–सी घड़ी है इस समय?"

पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि तिथि कौन–सी है, समय क्या हुआ है।

महर्षि बोले–"तो अब खिड़कियों को खोल दो! बाहर की वायु को आने दो! पंछी का मार्ग न रोको! मेरे पीछे आ जाओ सब लोग। गायत्री मंत्र का जाप करो!" और जब सब लोग जाप कर रहे थे तो महर्षि ने अन्तिम साँस लेते हुए कहा–"तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!" इसके अतिरिक्त दूसरी कोई प्रार्थना नहीं की, कोई दूसरी याचना नहीं की।

राज़ी है हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
याँ यूँ भी वाह वा है, और वूँ भी वाह वा है।।

रणवीर को फाँसी के दण्ड की आज्ञा हुई। सैशन जज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा–"इसे गले में रस्सी डालकर तब तक लटकाए रखा जाय, जब तक प्राण न निकल जाएँ।" एक कोलाहल मच गया हर ओर। लोग सहानुभूति के लिए मेरे पास आने लगे–रोनी सूरत बनाकर, उदास चेहरा लेकर। कभी–कभी आँखों में आँसू भरकर वे मेरे पास आते। मुझे हँसता हुआ देखकर आश्चर्य से कहते, "तेरी छाती में हृदय है या पत्थर? तेरे पुत्र को फाँसी की आज्ञा हो गई, उसकी मृत्यु उसके समक्ष खड़ी है और तू अब भी हँसता है?"

तब मैं गम्भीरता से कहता–"मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है। यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास आ जाए तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती। और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न आए तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोऊँ किसलिए?"

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

कर्त्तव्य की पुकार

महर्षि के जीवन की एक घटना है। कठिन तप के पश्चात्, घोर अभ्यास के अनन्तर, जब तक उनके लिए मुक्ति का द्वार खुल गया तो उन्होनें सोचा कि अब इस शरीर को जीवित रखने का कोई लाभ नहीं। गंगोत्तरी के निकट एक चोटी पर वे पहुँचे, इस इच्छा के साथ कि चोटी से कूदकर शरीर को छोड़ देंगे, परन्तु तभी भीतर से आवाज़ आई–'दयानन्द! यह क्या कर रहे हो? अपने लिए मोक्ष का द्वार खुल गया, इससे तुम्हें शांति मिल गई? नीचे इस जलते हुए संसार को देखो! ये अग्नि की लपटें, ज्वालाओं के समुद्र, क्या इन करोड़ों लोगों पर तुम्हें दया नहीं आती? क्या उनके सम्बन्ध में तुम्हारा कोई कर्त्तव्य नहीं? आगे बढ़ो! इस अग्नि को शान्त करने का प्रयत्न करो!'

तभी एक दूसरी आवाज़ ने कहा–'मैं एक छोटी–सी बूँद इस विशाल ज्वाला को कैसे बुझा पाऊँगी?'

और पहली आवाज़ ने अधिकार के साथ कहा–'यह अग्नि बुझे या न बुझे, तुम्हारा कर्त्तव्य यह है कि इसे बुझाने का यत्न करो। भले ही ऐसा करते हुए राख हो जाओ, परन्तु कर्त्तव्य यही है।'

क्रमशः

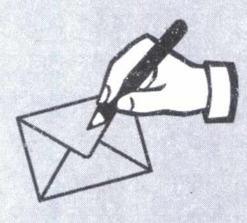

पत्र/कविता

सत्य का परिणाम

सच बोलने के बाद
आदमी नंगा हो जाता है।
एकदम निहत्था
नग्नता से उत्तेजित भीड़
पथराव करती है,
और तब तक
मुंह फेरे पत्थर फैंकती रहती है
जब तक
सत्य बोलने वाले का शरीर
चिन्दा चिन्दा होकर लाश नहीं बन जाता
फिर भीड़ सत्यवक्ता के मरने, के बाद
मगरमच्छ के आसूं बहाती है
सत्य बोलने वालों की लाश पर फूल चढ़ाती है
हमदर्दी दिखती है,
क्योंकि अब वह इस दुनिया में नहीं है
यह ढकोसला कब तक चलेगा मेरे भाई
स्वर्ग से सत्य वक्ता की रूह भीड़ से पूछती है
भीड़ अपनी नालायकी पर पछताती है
और रोती है
अंत में इकट्ठी भीड़ कह रही है
मरने वाला बोलता था सच
मगर हमने उसे मार दिया।

माम चन्द रिवाड़िया
ए-सी 23, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027
मों: 09212003162

समस्त निर्धन कन्याओं पर व्यय किया जाए

यह ज्ञात ही है कि हज यात्रा पहले समुद्री मार्ग से होती थी उसमें किराया कम होता था जो सभी हज यात्रियों को ही देना पड़ता था, पर बाद में यह यात्रा हवाई मार्ग द्वारा निर्धारित की गई जिसमें अधिक किराया होने से मुस्लिम तुष्टीकरण को अपनाते हुए सरकार ने हवाई जहाज के बढ़े हुए किराये में आये हुए अंतर को अनुदान के रूप में सरकारी कोष से देना आरम्भ किया था, जिसको ''हज सब्सिडी'' के रूप में प्रचार मिला। परंतु हज यात्रा पर इसके अतिरिक्त और भी बड़े बड़े सरकारी व्यय होते हैं जिनका बजट भी करोड़ों से कम नहीं होता। सरकार इन यात्रियों को आने-जाने, रहने, सुरक्षा व स्वाथ्य संबंधित अनेक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए अपने पूर्ण व्यय पर अधिकारियों, डॉक्टरों व कर्मचारियों के बड़े बड़े शिष्टमंडल भेजती हैं। हज यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा देने के लिए देश के विभिन्न हवाई अड्डों पर विशेषरुप से बड़े बड़े ''हज टर्मिनल'' बने हुए हैं और उनको नमाज अदा करने के लिए अलग से प्रार्थना कक्ष की भी उचित व्यवस्था रहती हैं। फिर भी आज यात्रा हज यात्रा मे दी जाने वाली अनुदान राशि को रोकने का सरकारी निर्णय का स्वागत होना स्वाभाविक हैं। क्योंकि वर्षों से इस अनुदान पर अनेक आपत्तियां उठ रही थी व सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसको 2022 तक समाप्त करने के लिए सरकार को परामर्श-निर्देश दिया था। इस निर्णय से राजकीय कोष में बचने वाली धनराशि जो लगभग 700 करोड़ होगी केवल मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा पर व्यय करने की बजाय देश की समस्त निर्धन कन्याओं पर व्यय किया जाए तो अधिक सार्थक होगा।

विनोद कुमार गुप्ता
Email:- guptavinod038@gmail.com

****

वह था महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद

वह कौन था जिसे डॉ. अम्बेडकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा है। जिसने मैकाले की शिक्षा नीति का करारा जबाव दिया। जिनको महात्मा गांधी अपना बड़ा भाई कहते थे। जिसने चाँदनी चौक में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजी पुलिस को गोली चलाने के लिये ललकारा था। जिसे जामा मस्जिद में मिम्बर और स्वर्ण मंदिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ। जिसने भारत को लोक अदालतों का विचार दिया। जिसने भारतीय स्वामित्व में पहला राष्ट्रीय स्तर का दैनिक प्रकाशित किया। जिसने अमृतसर में कॉग्रेस का अधिवेशन करवाने की हिम्मत दिखाई। वह था महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद।

बीसवीं सदी का चमत्कारी एवं प्रेरक व्यक्तित्व, देश और धर्म पर बलिदानी, निर्भीक सम्पादक एवं निर्भीक वीर संन्यासी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्थापक, साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक, अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता दिल्ली का बेताज बादशाह, शुद्धि अभियान का प्रणेता, महर्षि दयानन्द का मानस पुत्र, वह था महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद।

डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री
आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय इन्द्रप्रस्थ
फरीदाबाद (हरि.)
मो. 8700640736

****

आलोचना अशिष्टता का परिचायक है

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण विश्व को गायत्री मंत्र की भेंट दी इस भेंट में कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि आप आलोचना करो।

सम्पूर्ण वातावरण में अनेक परिन्दे निवास करते हैं। कोयल जैसा पक्षी अपनी सुरीली आवाज से सम्पूर्ण विश्व को लुभाता है वहीं चील, कौवे से सभी घृणा करते हैं।

समस्त आर्य विद्वानों से नम्र निवेदन है कि आलोचना शब्द का प्रयोग कदापि न करें।

आलोचना अशिष्टता का परिचायक है। आर्य शब्द सहिष्णुता का प्रतीक है।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट अमरोहा

****

संस्कार विधि पर आधारित धारावाहिक बनाया जाये

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक से एक बढ़कर ग्रन्थ लिखें हैं। उनमे से एक है संस्कार विधि। संस्कार विधि में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सोलह संस्कारों के बारे में वैज्ञानिक तरीके से वेदों का प्रमाण देकर बहुत ही अच्छे ढंग से लिखा गया उपयोगी ग्रन्थ है। खेद है कि संस्कार विधि सिर्फ विद्वानों और पंडितों तक ही समिति रह गयी क्योंकि जिन्हें संस्कार आदि कराने हो, पुरोहिताई करनी हो, वही संस्कार विधि पढ़ते हैं। इसलिए आम लोग संस्कार के अध्ययन से वंचित रह जाते है।

आज युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है। उन्हें हमारे संस्कारों के बारे में सही जानकारी न होने के कारण वे इधर-उधर भटकते रहते हैं। इसलिए सोलह संस्कारों के बारे में आम लोगों को अधिक से अधिक जानकारी हो। इसलिए संस्कार विधि पर आधारित धारावाहिक बनाया जाये।

सुरेश कुमार अग्रवाल
ब्लाक-2, फ्लेट-3 के., 167, जैसोर रोड,
क्लब टाउन ग्रीन्स, कोलकाता-700055
मो.- 9831847788

****

मकर संक्रान्ति पर्व से शताब्दी वर्ष में प्रवेश

आर्य समाज नेमदारगंज (नवादा) ने स्थापना के शताब्दी के नए सत्र में प्रवेश कर प्रथम आयोजन मकर संक्रान्ति पर्व के मधुर मिलन कार्यक्रम से किया। नवादा जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री सत्यनारायण आर्य के पौरोहित्य में देवयज्ञ सम्पन्न कर नवनिर्मित भवन परिसर का शुभ उद्घाटन किया गया। श्री आर.पी. साहू निदेशक–जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल नवादा, प्रो. कृष्णमुरारी साह सीताराम साहू कॉलेज नवादा, श्री मिथलेश कुमार सिंहा प्राचार्य–प्रोजेक्ट कन्या इन्टर विद्यालय हिसुआ, नवादा जिला ग्राम पंचायत मुखिया संघ अध्यक्ष–श्री उदय यादव, पैक्स अध्यक्ष–श्री मनोज कुमार आनन्द के सान्निध्य में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यो की युवा टोली ने श्री उदय पेन्टर, हर्षवर्द्धन आर्य, लखी नारायण आर्य, रामजी आर्य, किशोर गौरव, सोनू, गुड्डु के निर्देशन में उपस्थित सज्जनों का परम्परागत दही, चूड़ा, तिलकुट, एवं स्वादिष्ट व्यंजन से सत्कार कर उन्हें आह्लादित कर दिया।

निर्माण में प्राप्त सहयोग के लिए दानदाताओं को धन्यवाद देते हुए शेष बचे निर्माण कार्य में सहयोग की अपील आर्य समाज नेमदारगंज के मन्त्री श्री सन्तशरण आर्य ने की। कार्य रूकेगा नहीं ऐसा आश्वासन मिला।

परिवार, समाज तथा राष्ट्र में धर्म के नाम पर फैले गुरुडम एवं अन्धविश्वास से सचेत करते हुए आर्य समाज की आवश्यकता एवं सक्रियता को उजागर करने वाले मन्तव्य विचारकों ने उपस्थित किए।

प्रधान श्री अश्विनी कुमार ने सबका धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। शान्ति पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. मलोट में सी.बी.एस.ई. कार्यशाला

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज सीनियर सेकेंडरी स्कूल मलोट में सी बी एस ई नई दिल्ली के तत्त्वावधान में अंग्रेजी विषय की दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य श्री जी सी शर्मा ने की। कार्यशाला के रिसोर्स पर्सन प्रिंसिपल विवेक तिवारी प्राचार्य सत्य भारती सीनियर सेकेंडरी स्कूल, जगराओं एवं प्रिंसिपल दीपा डोगरा प्राचार्य कैंब्रिज इंटरनेशनल गर्ल्स स्कूल, जालंधर थे।

कार्यशाला में आए हुए रिसोर्स पर्सन एवं अध्यापकों का स्वागत करते हुए विद्यालय के प्राचार्य श्री जी सी शर्मा ने कहा कि सी बी एस ई नई दिल्ली द्वारा व्यापक रूप से प्रत्येक राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में अलग–अलग विषयों की करवाई जा रही कार्यशालाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसी प्रशिक्षण कार्यशालाएँ निश्चित रूप से अध्यापकों के लिए वरदान साबित होंगी तथा अध्यापन शैली को नया रूप प्रदान करके विषय को सरल व रूचिकर बनाएंगी।

कार्यशाला के रिसोर्स पर्सन ने अपने संबोधन में कहा कि हमें बच्चों को इस तरह से पढ़ाना चाहिए कि, पढ़ाते समय बच्चों की भी संपूर्ण सहभागिता होनी चाहिए। आज का युग शैक्षणिक तकनीक का युग है इसलिए प्रत्येक शिक्षक को शैक्षणिक तकनीक में कुशलता प्राप्त करके शैक्षिक गतिविधियों का नवीनीकरण करना चाहिए। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के चारों आयामों श्रवण, वाचन, लेखन, पुस्तक वाचन के समुचित विकास के नए–नए तरीके बताए।

कार्यशाला के अंत में विद्यालय की मुख्य अध्यापिका श्रीमती अमरजीत कौर मक्कड़ ने सभी का धन्यवाद करते हुए अपने प्रेरणास्पद उद्बोधन में कहा कि हर अध्यापक सकारात्मक दृष्टिकोण से सभी चुनौतियों का सामना करते हुए आधुनिक समय की मांग एवं विद्यार्थियों अभिभावकों की अपेक्षाओं आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए स्वयं को ऊर्ध्वगामी करने का भरपूर प्रयास करें। ऐसी कार्यशालाओं के दौरान सीखी गई सभी नवीन पद्धतियों को सही मायने में लागू करें।

कार्यशाला के दोनों ही रिसोर्स पर्सन अनुभवी व कुशल थे। जिन्होंने आए हुए सभी अध्यापकों का पूर्णरूपेण मार्गदर्शन कर नवीन शैक्षणिक तकनीक के द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यशाला में पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश राज्य के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 40 अंग्रेजी अध्यापकों ने भाग लिया।

मंच संचालन विद्यालय की अंग्रेजी अध्यापिका श्रीमती मनदीप कौर सोढ़ी ने किया।

डी.ए.वी. विद्यालय मलांजखण्ड में वार्षिक खेल प्रतियोगिता आयोजित

डी.ए.वी. एच.सी.एल पब्लिक स्कूल मलांजखण्ड में प्रथम वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मलांजखण्ड ताम्र परियोजना के अधिशासी निदेशक एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के चेयरमैन श्री. ओ.एन. तिवारी रहे। उन्होंने मशाल जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। खेलकूद प्रतियोगिता की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ खेल भी हमारे व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। इस अवसर पर अन्य अतिथि श्री राजीव चौरड़िया डीजीएम (सिविल), डॉ.

व्ही.के. शुक्ला, श्री जी.एन. रजावत, श्रीमती मीना मर्सकोले एवं श्री संजय सिंह आदि भी उपस्थित थे। विद्यालय के चारों सदन–शांति, शक्ति, स्मृति एवं सेवा के बीच विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे–दौड़ निडिल रेस, कबड्डी तथा छोटे बच्चों के बीच बैलून फाइटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन चारों सदनों में सेवा सदन अधिकतम अंको के साथ विजेता एवं शक्ति सदन उपविजेता रहा।

विद्यालय के प्राचार्य श्री आर. पी. मिश्रा ने खेलों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। स्कूल के क्रीड़ा शिक्षक श्री देवेन्दु सिकदर ने सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन विद्यालय के शिक्षक श्री शिवपाल सिंह एवं शिक्षिका श्रीमती कल्पना शुक्ला ने किया।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. पटियाला...

स्वामी श्रद्धानन्द एवं आर्यसमाज के उपकारों का गुणगान किया। इन मधुर भजनों की प्रस्तुति ने मुख्य अतिथि, अन्य अतिथिगण, बच्चों के सैंकड़ों अभिभावकों व सभी श्रोतागण को प्रशंसा करने तथा भावविभोर हो कर तालियाँ बजाने के लिए मजबूर कर दिया।

श्री रविन्द्र तलवाड़ (सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली) ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता तलवाड़ के साथ मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। अपने संबोधन में श्री तलवाड़ ने कहा, "विचारों में अपार शक्ति होती है। 'योग और भजन' आत्मा का परमात्मा से मिलन का माध्यम है। इस भव्य भजन–संध्या जैसे आयोजनों से बच्चों के विचारों में शुद्धता आती है। शिक्षा के साथ–साथ बच्चों को संस्कारवान बनाना ही डी.ए.वी. संस्था का उद्देश्य है।"

इस भजन संध्या की अध्यक्षता वैदिक विद्वान् ब्रह्मचारी पूज्य स्वामी विदेह योगी जी (कुरुक्षेत्र) ने की तथा अपना शुभ आशीर्वाद देते हुए उन्होंने अपने संबोधन में कहा "हमें जीवन को यज्ञमय बनाकर अपने कर्म पवित्र रखने चाहिए। प्रकृति और ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं का सदुपयोग 'पुण्य' तथा उनका दुरुपयोग 'पाप' है। राष्ट्र उत्थान और समाज कल्याण के लिए हमें अन्न–जल बचाने तथा अस्वच्छता को मिटाकर स्वच्छता को फैलाना चाहिए।"

इस पावन अवसर पर मुख्य अतिथि, स्वामी जी, प्राचार्य, एवं अतिथिगण ने स्कूल की 'न्यूजलैटर 2016–17' का लोकार्पण भी किया।

'वैदिक–भजन–संध्या' के समापन पर ईश्वर से विश्व व प्रकृति में चारों तरफ शांति बनाए रखने की प्रार्थना करते हुए मधुर नृत्य के साथ 'शांति–पाठ' किया गया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-19
Posted at N.D.P.S.O. ON 31-01-2018 & 01-02-2018

बी बी के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन में वैदिक यज्ञ का आयोजन

बी के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन द्वारा नव समैस्टर पर वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में यजमान की भूमिका श्री सुदर्शन कपूर चेयरमैन, लोकल मैनेजिंग कमेटी ने निभाई। यज्ञोपरान्त प्रिंसिपल डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने स्टाफ एवं उपस्थिति पर पुष्प वर्षा करते हुए सभी के स्वास्थ्य के लिए मंगल कामना की। उन्होंने आये हुए अतिथियों का स्वागत् करते हुए महाविद्यालय के स्पोर्ट्स विभाग की अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक उपलब्धियों से अवगत करवाया। आपने महाविद्यालय की आर्य युवती सभा को यज्ञ के आयोजन पर शुभकामनाएँ प्रदान की।

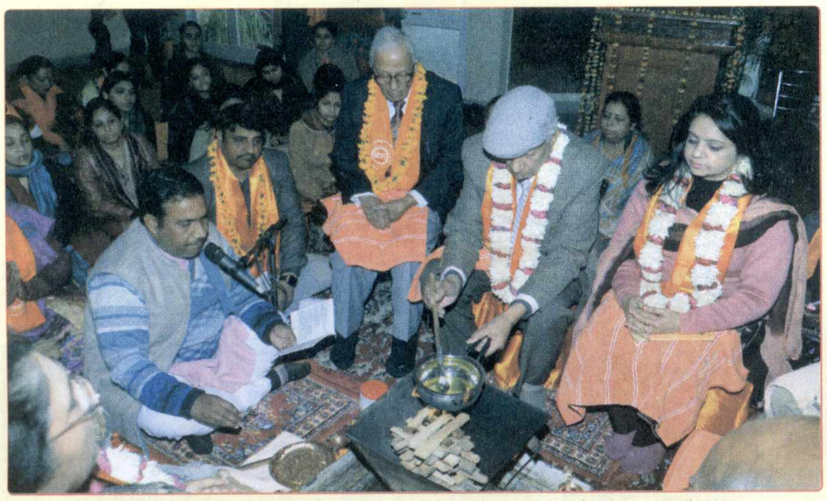

कॉलेज के संगीत विभाग द्वारा 'ज्ञान की ज्योति मन में जगा दो' एवं 'सुखी बसे संसार सब' भजनों का सुमधुर गायन किया। डॉ. वी पी लखनपाल, सदस्य लोकल मैनेजिंग कमेटी ने भी उपस्थिति को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस संस्था में आकर आर्य सामजिक गतिविधियों को देखकर प्रसन्नता होती है। उल्लेखनीय है कि नववर्ष की पावन बेला पर कॉलेज प्रागंण में यज्ञ सम्पन्न किया गया था।

चेयरमैन श्री सुदर्शन कपूर जी ने सभी का आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन डॉ. शैली जग्गी ने किया। इस अवसर पर श्रीमती बलबीर बेदी, प्रि. नीरा शर्मा, प्रि. डॉ. सिम्मी लूथरा, प्रि. परमजीत छाबडा, प्रि. लखविंदर कौर एवं आर्य समाज से श्री हीरा लाल कन्धारी, श्री राकेश मेहरा सहित महाविद्यालय के टीचिंग एवं नॉन टीचिंग विभाग के सदस्य उपस्थित थे। प्रसाद वितरण से कार्यक्रम का समापन हुआ।

झज्जर (हरियाणा) में मकर सक्रांति के उपलक्ष्य में भजन-प्रवचन

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर के तत्वावधान मकर सक्रांति के उपलक्ष्य एवं माता धापा देवी की पुण्य स्मृति में भजन-प्रवचन का कार्यक्रम किया गया, जिसकी अध्यक्षता रिटायर्ड प्रधानाचार्य डॉ. एच. एस यादव ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य ईश्वर शास्त्री, रिटायर्ड प्राध्यापक द्वारका प्रसाद, एवं वैदिक सत्संग समिति झज्जर (रजि.) के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र वैदिक रहे यज्ञ के ब्रह्मा पं. जयभगवान आर्य रहें, यजमान महाशय रतीराम दम्पति और मुख्य वक्ता श्री एच.एस यादव ने [illegible] सम्बोधन [illegible] कहा कि वेदों के अनुसार च[illegible] रहने से विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। वैदिक ज्ञान समस्त मुख्यवक्ता के

लिए है। इसमें किसी धर्म विशेष अथवा सम्प्रदाय के लिए ज्ञान नहीं है बल्कि वेदों का सन्देश सार्वभौम है। इसलिए वेदों में बताए गए रास्ते पर चलना चाहिए। धर्म में पाखण्ड फैलाने और व्यभिचार में संलिप्त तथाकथित से बचना चाहिए तभी परिवार में सुख शान्ति एवं समृद्ध हो सकती है। रिटायर्ड प्राध्यापक श्री द्वारका दास ने मकर सक्रांति पर्व के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया जिसमें इसके महत्व के बारे में बताया और कहा कि हमारे सभी पर्व समाज में भाईचारा बढ़ाने का सन्देश देते है। आचार्य बालेश्वर शास्त्री प्राध्यापक ने कहा कि हमें अपने धर्म के बारे में सही जानकारी होनी चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि धर्म क्या है? हम सब को धार्मिक होना जरूरी है क्योंकि धर्म पर चलने वाला व्यक्ति सत्यवादी, चरित्रवान, विद्वान तथा समस्त है। इसलिए धर्म पर चलना जरूरी है। डॉ. मंगतराम यादव रमेशचन्द्र वैदिक, पं. जयभगवान, ब्र. कृष्ण, भगवान सिंह, चमन लाल सूबे दार भरतसिंह आदि ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में प्रकाश आर्य, सूर्य प्रकाश (मन्त्री, कोषाध्यक्ष आर्य समाज झज्जर), ओमप्रकाश, मुकेश, अशोक, धीरज, बुधम, रीना आर्या, सेवा, सुशीला, सोनिया, विधा, पुष्पमा, सवित, प्रेम, मेहली आदि का विशेष योगदान रहा।

[illegible]माज कोटा ने निराश्रितों के बीच किया यज्ञ

आ[illegible] के तत्त्वावधान में रंगबाड़ी स्थित निराश्रित बालगृह मधुस्मृति संस्थान में देवयज्ञ किया गया।

आचार्य शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में मुख्य यजमान सुक्षी साक्षी चढ्ढा न्यूजीलैण्ड में अध्ययनरत, मानसी चढ्डा, कीर्ति चढ्डा ने निराश्रित बालगृह के बालकों के साथ देवयज्ञ करते हुए वेदमंत्रोच्चारण के साथ हवन कुण्ड में आहुतियाँ डाली तथा परममिता परमात्मा से सभी के लिए मंगलकामना व विश्व कल्याण की कामना की।

मधुस्मृति संस्थान का परिसर व आसपास का सारा वातावरण यज्ञ की महक से सुगंधित हो गया। निराश्रित बालकों ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए व सामूहिक सस्वर गायत्री मंत्र का पाठ किया। आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि यह बच्चे भी भगवान की साक्षात् मूर्तियाँ हैं। हमें इनकी सेवा सहायता करते से सुख की प्राप्ति होती है।

इस अवसर पर आर्यसमाज के आर. सी.आर्य, श्रीमति इन्दू आर्या, हरगोविन्द निर्भीक, श्रीमति बृजबाला निर्भीक ने यज्ञकर्ता सभी बच्चों पर पुष्प वर्षा कर उन्हें आर्शीवाद दिया व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

शांति पाठ के पश्चात् सभी बच्चों को खाद्यान्न के पैकेट साक्षी चढ्डा द्वारा वितरित किये गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजलि निर्भीक ने किया अतिथियों का आभार संस्थान की संचालिका बृजबाला निर्भीक ने व्यक्त किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - **पूनम सूरी**